'आइटम' नहीं है महिलाएं

महिलाएं बरसों से अपनी पहचान खोजने की जद्दोजहद कर रही हैं, आज उन्होंने अपनी पहचान सिद्ध कर भी ली है, लेकिन उसे करारा झटका तब लगता है, जब उसे माल या आइटम के रुप में संबोधित किया जाता है। महिलाएं कोई 'आइटम' नहीं हैं वे कोई बटेर या चिड़िया नहीं है, एक स्त्री है जिसके द्वारा दुनिया में मनुष्य नामक प्राणी जन्म लेता है।

युगों पहले इस देश में नारी की पूजा मातृ शक्ति के रूप में की जाती थी, तब उसे पुरुषों के समान दर्जा भी हासिल था। दुर्गा और काली, लक्ष्मी और सरस्वती के रुप में स्त्री भी पूजा आज भी की जाती है। दुर्भाग्य की बात है आज उसे इस नजर से नहीं देखा जाता।

आज बहुराष्ट्रीय कंपनियों और मीडिया की नजर में औरत की पहचान एक आइटम या माल से ज्यादा कुछ नहीं है। आइटम नाम भी मीडिया का ही दिया हुआ है। लेकिन इसके लिए पुरुष प्रधान समाज या मीडिया को पूरी तरह दोष नहीं दिया जा सकता। महिलाएं अपनी इस इमेज के लिए खुद भी जिम्मेदार हैं।

फिल्मों, टेलीविजन व विज्ञापनों में महिला चरित्रों ने अपना अंग प्रदर्शन भी जमकर किया जिसमें कुछ अभिनेत्रियां आईटम-गर्ल के रूप में अधिक चर्चित हो गई, इसके बदले उन्हें पैसा भी भरपूर मिला, लेकिन इससे औरत का कितना भला हुआ, औरत की छबि कितनी खराब हुई, यह विचारणीय है।

नारी जाति आज जिस दोराहे पर खड़ी है, वहां उसे यह समझ में नहीं आ रहा है कि आखिर उसे किधर जाना है? एक रास्ता तथाकथित आधुनिकता की ओर जाता है, जहां पैसा है, ग्लैमर है लेकिन सम्मान नहीं है। यहां तक पहुंचने के लिए उसे तरह-तरह के समझौते करने पड़ते हैं।

दूसरा रास्ता वही पुराना, जहां स्त्री को जाने क्यूं ऐसा लगता है कि देवी के रुप में पूजने का ढोंग कर पुरुष लगातार उसका शोषण करता रहता है, उसे धोखा देता है, इसलिए जब भी औरत को मौका मिलता है, वह पुरुषों के द्वारा निर्धारित नियमों को तोड़ने का प्रयास करती है या उसके खिलाफ आवाज भी उठाती है। आज कुछ ऐसे लोग भी हैं जो स्कूल-कॉलेजों में ड्रेस कोड के विरोध पर उतारू हैं।खासकर कॉलेजों में इस ड्रेस कोड का विरोध करने वालों का कहना है कि यह नारी स्वतंत्रता का हनन है। कॉलेज जाने वाली छात्राएं चाहे जो पहनकर जाएं, उसमें कोई बुराई नहीं है, भले ही वह कितनी ही सेक्सी क्यूं न हो।

इस सेक्सी इमेज को लेकर भी महिलाओं में विरोध है। बहुत सी महिलाएं यही चाहती है कि वे किसी भी तरह से पुरुषों को अपनी ओर आकर्षित करें, लेकिन इसे लेकर उनमें मतभेद हैं। यह मतभेद भी अब कम हो रहा है। अति परम्परावादी महिलाओं को भी जाने ऐसा क्यूं लगने लगा है कि खुलेपन की इस हवा में बहुत अधिक बुराई नहीं है। उन्होंने अपनी बेटियों के पहनावे पर पाबंदियां लगाना बन्द कर दिया है।

माँ-बाप की इस उदारता का अर्थ उनकी लड़कियों ने गलत अर्थों में लिया है। लड़कियों को लगने लगा है कि उन्हें कुछ भी करने की छूट मिल गई है। इसके चलते उनके कई बॉयफ्रेंड होते हैं। लड़कों से मित्रता बढ़ाना कोई बुरा नहीं हैं लेकिन पुरुष से मित्रता की कोई सीमा होनी चाहिए अक्सर सीमाएं लांघ दी जाती है, कहां की नैतिकता या फिर नारी स्वतंत्रता है?

अपना रूप निखारने की स्त्री के अंदर एक सहज सरल प्रवृत्ति होती है लेकिन अपने आपको औरों से अधिक सेक्सी या उत्तेजक दिखाने की जो प्रवृत्ति महिलाओं में जन्म ले रही है, उससे उसकी पहचान स्त्री के बदले एक आइटम के रूप में ही हो रही है।

यदि महिलाएं ऐसा समझती हैं कि उनके प्रति समाज के इस नजरिए में आने वाले दिनों में कोई बदलाव आयेगा तो उसके लिए पहल भी महिलाओं को ही करनी होगी। खुद को दोबारा फिर उसी रूप में ढालना होगा। जिसकी वजह से वे युगों-युगों से जानी व पहचानी जाती हैं।

प्रेषक- सोहन नागर
19/6, मनोरमा गंज, इन्दौर

।। श्री गणेशाय नमः ।।

विजय स्टील डेकोर

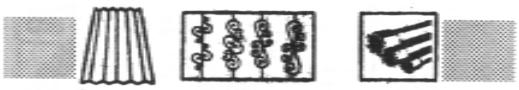

35, धनवन्तरी नगर, जी-1, राजसुधा अपार्टमेन्ट,
दधिची चौराहा, इन्दौर फोन 2321578,
मो. 98268-32786, 98936-24291

।। श्री सांई नमामि नमः ।।

फाइबर शीट मनभावन रंग एवं डिजाईन्स में रेडी स्टॉक में उपलब्ध
घर में बाल्कनी एवं सीढ़ीयों में उपयोग होने वाली
Railing Stair Case/Casting/Wrought Iron/Stainless Steel, Brass Exclusive
G.P. Fitting "Spring", Sanitary Fitting Gold Line. C.P.
की सम्पूर्ण श्रृंखला व सभी कम्पनियों के.जी.आई.पाइप के विक्रेता
सभी प्रकार के हार्डवेयर का सामान इन्दौर शहर के मूल्य पर
आपकी कालोनी में उपलब्ध
R.K. Dave (Pappu)

गोली का जवाब शब्दों से देना आसान है क्या?

मुंबई हमलों के लिए भारत सरकार द्वारा कहा गया था कि पाकिस्तान को इस बात की पक्की गारंटी देना होगी कि उसकी धरती का इस्तेमाल मुंबई जैसे खून-खराबे के लिए नहीं होने दिया जाएगा। ऐसा हमला होने पर पाक को बहुत बड़ी कीमत चुकाना होगी। तारीफ के काबिल है सरकार की ये धमकियां। क्या सख्त कदम उठाया है हमने। इतना कठोर निर्णय?

आतंकवाद मिटाने के लिए हमने क्या त्याग नहीं किया। पाकिस्तान को चेतावनी दी। हाई अलर्ट जारी किया पूरे देश में। शहीद हुए जवानों और लोगों की याद में दो मिनिट का मौन रखा हमने। संसद सत्र की तो शुरुआत ही श्रृद्धांजलि से हुई। देश भर में मोमबत्तियां जला-जलाकर और देशप्रेम के गीत बजाकर सबको याद किया गया। कितने ही शहरों में बड़ी-बड़ी मानव-श्रृंखलाएं बनाई गई। हमारे समाज के बुद्धिजीवियों ने परिचर्चाओं के माध्यम से मैटर को डिस्कस किया। समाचार पत्रों में अच्छे-अच्छे लेख छपे। पढ़कर अच्छा लगा। अच्छी चीजें पढ़ो तो कैसा भी गुस्सा हो, शान्त हो जाता है।

जब मुंबई की ताज होटल पर हमले की घटना घटी, हमें बहुत गुस्सा आया। गुस्से में हमने क्या-क्या बक डाला। खून खौल उठा हमारा। कठोर शब्दों का इस्तेमाल हुआ हमारी ओर से। गोली का जवाब शब्दों से देना कोई आसान काम है क्या? हमला कितना भी तगड़ा हो हमारा विरोध उससे भी तगड़ा रहता हैं। जांच करवाने में हम कोई कसर बाकी नहीं रखते। सबूत भी पुख्ता रहते हैं हमारे। लेंग्वेज और टोन की जितनी सख्ती हमारे यहां है, शायद कहीं नहीं। पहले तो तत्काल हम हमले की निन्दा कर देते हैं। यह हमारे राष्ट्र के चरित्र की विशेषता है। चाहे हमारे कितने भी जवान और कमांडो शहीद हो जाएं पर हर बार आतंकवाद को जड़ से समाप्त करने का संकल्प हमसे अच्छा कोई नहीं ले सकता। श्रृद्धांजलि देने में हमारी और हमारी भावनाओं की टक्कर कोई नहीं ले सकता। प्रवचनकर्ताओं, ज्ञानचन्दों, दूसरों को सिखाने और हर क्षेत्र कॉमनसेन्स मात्र से बकबक करने वालों के इस मुल्क में दो मिनिट का मौन रखा जाए, इससे बड़ा त्याग क्या होगा? कंधे से कंधा मिलाया और हाथों में हाथ। घटना की भर्त्सना हुई। वह भी कड़े शब्दों में। कहा भी कि अब ऐसी घटना की पुनरावृत्ति हुई तो हम जिम्मेदार को नेस्तनाबूत कर देंगे। (मार खा ली और बोले-अभी मार लिया तो मार लिया अबके मारा तो ठीक नहीं होगा)

क्या आसान है यह सब ? अमेरिका क्या जाने। जरा टॉवर क्या टूटा कि टूट पड़े अफगानिस्तान पर। हमारा धैर्य देखो। कितने दिन तक सरकार ने मामले को देखा, जांचा, परखा, रिपोर्टे आई, सबूत इकट्ठे हुए, चेतावनी दी। यह नहीं कि बिना सोचे-समझे टूट पड़ो आतंकवादियों के अड्डों पर। हम लोग नहीं लेते इस तरह से गुस्से और जल्दबाजी में गलत निर्णय। आखिर शालीनता भी कोई चीज होती है। हम लोग शान्त, गम्भीर और समझदार हैं। पहले मामले को समझने की कोशिश करते हैं। न समझ में आए तो समझने-समझाने के लिए यदि अमेरिका भी जाना पड़े तो बिल्कुल जाते हैं। हम कायर नहीं हैं। दुनिया को हमने दिखा दिया है कि हम कितने सभ्य और संस्कारवान हैं। आखिर हमारे साथ गौरवशाली इतिहास है- हजारों साल का। आतंकवाद को जड़ से मिटाने की हमारी प्रबल इच्छा है। किसी भी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पहले उसकी इच्छा करना पड़ती है। हम युद्ध नहीं, शांति चाहते हैं, क्योंकि मार खाने के बाद हम शांत बने रहते हैं। अमेरिका से हम डरते थोड़े ही हैं? वो तो ऐसे ही सामान्य बातचीत करना पड़ती है। हमारा मित्र राष्ट्र है वो। हमारे संबंध उससे मधुर और मित्रवत हैं। मित्र से पूछा तो क्या गलत किया? वैसे भी झगड़ा हो जाए तो दादा, बहादूर, पहलवानों को पटाकर रखना पड़ता है। अब ताज पर ही तो हमला हुआ, कोई ताजमहल पर तो नहीं। ताजमहल पर होता तो हम तत्काल कार्यवाही कर (फाईल चलाकर) आतंकवादियों के सभी अड्डों का रातों-रात सफाया कर देते (हमारी सरकार के दिमाग जैसा)

खैर, अब तो हम सब आतंकवाद के खिलाफ एकजुट हो गए हैं। हमारी सरकार भी अब उठ खड़ी हुई है (बारबार उठकर बैठ जाती है, आराम से)। अब के कुछ हुआ तो निर्णायक जंग की तैयारी (कुछ ही वर्षों में)। बस ज्योतिषी मुहूर्त निकाल दे कि कार्य का शुभारंभ (गणेश पूजन इत्यादि) कब करें कि जीत हमारी ही हो। देर है तो बस गढ़े हुए पत्थर के उखड़ने की जिसके उखड़ने तक हम सामने वाले को पत्थर मारने की धमकी देते रहें। पत्थर कभी उखड़ेगा नहीं और हमारी धौंस कायम रहेगी।

बातें करना, राय देना, ज्ञान का प्रदर्शन करना, विरोध प्रकट करना, अच्छे की तारीफ और बुरे की निन्दा करना हमारी विशेषताएं हैं। हम जानते हैं-कैसे कठिन परिस्थिति में अपने आपको ढालना। जुल्म सहन करना। जहां तक संभव हो जबान की लड़ाई लड़ लो और धीरे-धीरे ठंडे पड़ जाओ। देश की नीति में आड़े आते हैं चुनाव व राजनीति। यही हमारी नीति है। यही नियति भी।

प्रस्तुतकर्ता- विनय नागर
125, पलसीकर कॉलोनी, इन्दौर
मो. 9893449974

चारों ओर चार-चार

अंको की राजनीति में कुछ अंक ऐसे होते हैं जो पुरातन काल से एक ही रूप में चले आ रहे हैं- उनका रूप न कभी बदला है और न कभी बदलेगा कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं-

चार जीव- अण्डज, पिण्डज, उष्मज, स्थावर।

चार लोक- ब्रह्मलोक, इन्द्रलोक, विष्णुलोक, गोलोक।

चार लिपी- प्राकृत, खरोष्टी, ब्राह्मी, संस्कृत।

चार वर्ण- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र।

चार धाम- पूर्व में जगन्नाथपुरी, पश्चिम में द्वारकापुरी, दक्षिण में रामेश्वरम् और उत्तर में बद्रीनाथ।

चार कुम्भ- प्रयाग, हरिद्वार, नासिक, उज्जैन।

राजा दशरथ के चार पुत्र- राम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न।

राजा जनक परिवार की चार पुत्रियां- सीता, उर्मिला, माण्डवी, श्रुतिकृति।

चार महानगर- कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, दिल्ली।

चार आश्रम- ब्रह्मचर्य, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ, संन्यास।

चार दिशा- पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण।

चार पुरुषार्थ- धर्म, कर्म, अर्थ, मोक्ष।

चार नीति- साम, दाम, दंड, भेद।

चार युग- सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलयुग।

चार प्रहर- भोर, मध्याह्न, सांयकाल, रात्रि।

गणेशजी की चार भुजा- पहली भुजा- आशीर्वाद का रुप, दूसरी भूजा- रस्सी, का पूरे विश्व को एक सूत्र में बांधने का रूप, तीसरी भूजा-खड्ग- संहारने के रूप का प्रतीक, चौथी भूजा-लड्डू प्रसाद का रूप

चार वेद- ऋगवेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद

चार अवस्था- बाल्यावस्था, यौवनावस्था, अधेड़ावस्था, वृद्धावस्था

एक लोक कहावत है-

पन्द्रह कनागत, नौ नौरते, दसवां दशहरा, बीसवी दिवाली

अर्थात कनागतों में पितृतर्पण के बाद नवरात्रि में शक्ति की उपासना का समापन दशहरे के पंद्रह रूप में होता है उसके बीस दिन के बाद दीवाली सम्पूर्णता का प्रतीक है। यहां भी चार का महत्व रहा।

सविता (नीलू) दवे

29, शांति विहार, दिल्ली

जय हाटकेश सिर्फ नागर बंधुओं हेतु जय श्री कृष्ण

व्यापारी बनें मात्र 500/-रुपए से शुरू करें...

हमारे उत्पादन

- जालिम-एक्स मलम
- जालिम-एक्स क्रीम
- जालिम-एक्स लोशन
- पंचसुधा
- वामा क्रीम
- मेकाडो बाम
- अंजू बाम
- पेन ऑफ ऑईल
- पेन क्योर आइंटमेंट
- हजम टेबलेट
- अंजू कफ सायरप
- अर्शोमृत टेबलेट
- सुगम चूर्ण
- पाचक चूर्ण
- नारी रसायन

आप हमारे उत्पादन MRP. से आधे दाम पर प्राप्त करें और MRP.पर बिक्री करें।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करे-

नवीन झा

Anju अंजू फार्मास्यूटिकल्स

111/112 अलंकार चेम्बर्स, रतलाम कोठी, ए.बी. रोड, इंदौर- 452001- (म.प्र.)

मोबाइल नंबर- 09425062415

भगवान हाटकेश्वर का प्रधान मंदिर वडनगर में ही है

हाटकेश्वर की स्थापना- एक समय भगवान शिव सती के वियोग में अपनी सुध-बुध भूलकर दिगम्बर अवस्था में यत्र-तत्र विचरने लगे। विचरण करते हुए ये इस 'आनर्त देश' से जहां इस समय द्वारका है आये तथा वियोग के दुःख में उन्होंने अपना लिंगपात कर दिया। यह लिंग पृथ्वी को भेदकर पाताल लोक में चला गया। लिंगपात के कारण पृथ्वी पर कई प्रकार के उत्पात आरंभ हो गये। मनुष्य तो क्या देवताओं तक में खलबली मच गई। इन्द्र,विष्णु,ब्रह्मा आदि इस आनर्त देश में आये तथा शिवजी से पुनः लिंग धारण करने की प्रार्थना की। ब्रह्माजी ने शिवजी से कहा कि सती ने पार्वती के रूप में पुनः हिमालय के यहां अवतार ले लिया है और वह पति रूप में आपके सिवाय किसी को भी वरण नहीं कर सकती।

अतः आप हमारी प्रार्थना मानकर इस लिंग को पुनः धारण कीजिये। इस पर शिवजी ने कहा कि मैं लिंग धारण तभी कर सकता हूं जब देवता, मनुष्य, राक्षस, नाग, किन्नर सब इसकी सेवा करना स्वीकार करें। ब्रह्माजी ने कहा कि सर्वप्रथम मैं इन सबकी ओर से आपके लिंग की सेवा करता हूं। यह कहकर ब्रह्मा आदि सभी देवता पाताल गये और शिवजी के लिंग की विधिवत पूजा की, तब शिवजी ने प्रसन्न होकर पुनः लिंग धारण किया। जिस मार्ग से यह लिंग पाताल से पृथ्वी पर पुनः आया, उस मार्ग पर एक बड़ा रास्ता हो गया। जिससे पानी की धारा निकलने लगी। यही धारा 'पाताल गंगा' कहलाई। ब्रह्माजी ने पाताल में उस शिवलिंग के स्थान पर एक स्वर्ण लिंग बनवाकर विधिवत् स्थापित किया जिसका नाम 'हाटकेश्वर' रखा। 'हाटक' का अर्थ स्वर्ण है। स्वर्ण का लिंग बनवाकर वहां स्थापित करने से ही इसका नाम 'हाटकेश्वर' प्रसिद्ध हुआ। हाटकेश्वर का मुख्य लिंग इसी कारण पाताल में है। पृथ्वी पर यही लिंग 'महाकाल' नाम से प्रसिद्ध है तथा आकाश में इसे 'तारकलिंग' कहते हैं। ये तीनों लिंग पूज्य है। स्कन्द पुराण में हाटकेश्वर का बड़ा महात्म्य बताया गया है। ये तीनों ही लिंग भगवान शिव के तीन रूप माने जाते हैं

''आकाशे तारकं लिंग, पाताले हाटकेश्वरम् ।
मृत्युलोके महाकालं, लिंगत्रय नमोस्तुते ।।''

पाताल में जिस शिवलिंग की स्थापना की गई थी उसकी नाग लोगों ने भी पूजा एवं आराधना आरंभ कर दी। जिस मार्ग से यह शिव लिंग पाताल से पृथ्वी पर आया था उससे पाताल से पृथ्वी तक आवागमन का मार्ग बन गया। आवागमन चालू होने पर शंकर के उपासक वडनगर के इन अष्टकुली ब्राह्मणों ने भी हाटकेश्वर को अपना इष्ट देव मानकर पूजा, आराधना शुरू कर दी। भगवान हाटकेश्वर इनके कुल देवता माने जाते हैं जिनका वडनगर में प्रसिद्ध मंदिर है। बाद में जहां-जहां इन ब्राह्मणों की बस्तियां बनी वहां-वहां हाटकेश्वर के मंदिर बनाये किन्तु प्रधान मंदिर यहीं वड़नगर में है। कहते है भगवान वामन ने तीनों लोक नापते समय पहला पैर यहीं रखा था। वड़नगर का प्राचीन नाम 'चमत्कारपुर' था। भगवान कृष्ण भी यहां पधारे थे। उन्होंने भी यहां अनेक शिवलिंगों की स्थापना की। यहां सप्तर्षि आश्रम, विश्वामित्र तीर्थ, पुष्कर तीर्थ, कपिला नदी आदि स्थान दर्शनीय हैं। इसकी गणना तीर्थ स्थानों में होती है।

घड़ी प्यारी लगने लगी

एक धनवान लेकिन कंजूस महिला के यहां अपने बहुत बड़े घर की साफ सफाई तथा काम-काज के लिये दो नौकर थे। वह रोज सुबह पांच बजे का अलार्म लगाती और दोनों नौकरों को उठा कर घर के काम में जोत देती। नौकर अकसर घड़ी पर झुंझलाते। वे सोचते, काश! किसी तरह इस कमबख्त घड़ी से छुटकारा मिल जाए तो आराम से दूसरों की तरह देर तक सोने को मिले। बिल्ली के भाग से सीका टूटा। एक दिन मालकिन के हाथ से घड़ी गिर गयी और बंद हो गयी। मालकिन बूढ़ी हो चली थी और उम्र के साथ उसकी याददाश्त भी काफी कमजोर हो गयी थी। उसे नींद भी कम आती थी। घड़ी के खराब होने के कारण अब वह अंदाजे से ही समय का अनुमान लगाती थी। घड़ी सुधरवाने या नयी घड़ी खरीदने में पैसा खर्च करने के लिए वह बिल्कुल तैयार नहीं थी। वह जब भी जाग उठती, दोनों नौकरों को भी जगा देती। आखिरकार तंग आकर दोनों नौकरों ने खुद अपने खर्च से घड़ी सुधरवा ली। घड़ी ठीक होने पर पुरानी व्यवस्था फिर शुरु हो गयी। पर अब हालात बदल गए थे। पहले जो घड़ी नौकरों को फूटी आंख नहीं भाती थी वही अब उन्हें बेहद प्यारी लगने लगी थी।

-आशा नागर
सी-12/9, ऋषि नगर, उज्जैन फोन 0734-2521157

एक चिट्ठी केशव के नाम

केशव क्यों हो मौन?
गीता का वचन भूल गए क्या?
पार्थ से क्यों नहीं कहते?
उठो पार्थ! गांडीव उठाओ।
शत्रु का करो संहार।
कलयुगी दुर्योधन की सेना ने,
आतंक का ताण्डव मचाया है।
अभिमन्यु बने कामटे, करकरे और सालस्कर
आतंकवादियों के चक्रव्यूह में उलझे,
किया प्राणों का त्याग।
वचन दिया था तुमने केशव,
भूल गए क्यों अपनी बानि।
लूंगा फिर अवतार धरा पर,
जब-जब होगी धर्म की हानि।
आओ केशव धरा बुलाती,
निरपराधों की व्यथा बुलाती।
केशव चलाओ चक्र सुदर्शन
तोड़ो अपना यह मौन।

-वल्लभा (विभा) बुच
27, उदय पार्क, आणंद (गुजरात)

जुड़ रहें हैं दुनिया भर के नागर

नागर समाज की वेब साइड nagars.info ने महाशिवरात्री पर अपनी सातवीं वर्षगाठ धुमधाम से मनाई। देश विदेश से बधाई और प्रशंसा के संदेश प्राप्त हुए। इन्दौर शहर से आरम्भ इस साइट पर 500 से अधिक परिवार अपने वैवाहिक संदेश लेकर आगे आये है सामाजिक वार्तालाप हेतु 250 से भी अधिक सदस्यों ने नामांकन करवाया है जो चेट, पोल, क्वीज फोटो गेलेरी और विचार विमर्श में भाग ले सकते हैं। इमेल से सम्पर्क बनाने वाले सदस्यों की संख्या तो 7000 को भी पार कर गई है। इस साइट को श्री आशीषजी त्रिवेदी, श्रीमती शारदाजी मण्डलोई, श्री दीपकजी शर्मा (सभी इन्दौर) और आगरा से प्रकाशित होने वाली नागर समाचार पत्रिका के व्यवस्थापक श्री गजाननजी त्रिवाडी का प्रोत्साहन एवं आशीर्वाद प्राप्त होता रहा है और यही श्री अर्पण झा के लिए गौरव का विषय रहा है।

समय बदल रहा है वर्षो पूर्व श्री हेमंत झा और जलज झा का बांसवाड़ा के नागरों तक सीमीत रखने वाली साइट nagarwara.com का पुनः जन्म हो गया है यह किसी के लिये निराशा का विषय नहीं है कम्प्यूटर तकनीक की बदोलत बम्बई, इन्दौर, कलकत्ता, पुना, अहमदाबाद, बैंगलोर, आस्ट्रेलिया, कनाडा और अमेरिका में लोगों को श्री निमेश नागर ने आवाज दी है दीपक नागर ने प्रोत्साहन दिया और श्री शशीकांत पंचोली के सुपुत्र श्री रंजन नागर ने बांसवाड़ा में होने वाले सभी कार्यक्रमों को साइट तक पहुंचाने की भागीरथी जिम्मेदारी स्वीकार की और उसे निभा रहे है यही कारण है कि 18 जनवरी को हाटकेश्वर मंदिर वड़नगर में अहमदाबाद के मणीनगर और सेटेलाइट एरिया से और बांसवाड़ा से अलग-अलग बसे श्रद्धालु नागर वहां पहुंचे सभी ने वहां रूद्राभिषेक भजन महाआरती और महाप्रसाद का लाभ लिया दूसरी यात्रा बांसवाड़ा चारभूजा की निकाली 15 फरवरी को श्री दुर्लभ विलासी मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा और होली पर नागर समाज के पंचो ने समाज के साथ गमी और खुशी (शादी, सगाई, जनोई, पुत्र और पुत्री प्राप्ती की गोढ) सभी घरों में जाकर बांटी और सभी ने खुशी के इजहार में एक निर्धारित चंदा समाज सेवा हेतु जमा करवाया इसका संपूर्ण विवरण विडियो से वेबसाइट nagarwara.com पर टीवी चेनल की तरह देश विदेश में रहने वाले नागरों के लिया प्रसारित कर दिया इसके साथ-साथ बांसवाड़ा में होने वाले शादी ब्याह का सचित्र वर्णन जन्म मरण के समाचार इतनी सुगमता और सरलता से सभी नागरों तक पहुंचाया जाता है श्री नीमेश और श्री रंजन नागर को होली महोत्सव में एक फूल nagarwara.com के दो माली की उपाधि दी है तो प्रशंसको ने श्री अर्पण झा को vishwakarma@nagars.info घोषित किया है जबकि कुछ लोगों ने अर्पण के वरोक (साइट) पर कोई नहीं आया भी बताया है। हर्ष की बात यह है कि बासवाड़ा नागर समाज की पूरी वंशावली nagar's.info और nagarwara.com दोनों पर उपलब्ध है इसकी तकनीक से प्रभावित प्रवासी नागरों (USA) ने भी इसी तरह का संकलन करने का अनुबंध किया परन्तु ऐसा डेटाबेस प्राप्त नहीं कर सके। ये साइट अंग्रेजी, हिन्दी और गुजराती किसी भी भाषा को स्वीकार कर रहे है।

बेवसाइट कम्प्यूटर शिक्षित लोगों के लिए स्वर्ग है समाचारों का आदान प्रदान आसानी से हो जाता है परन्तु इन समाचारों का संकलन और संग्रहण बहुत कठीन होता है। नागर समाज में कम्प्यूटर लीट्रेसी और कनेक्टीवीटी बहुत बड़ी समस्या है दोनों के अपने अपने दायरे है जिसे बखूबी निभाने के लिए इन्दौर से जय हाटकेशवाणी मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया गया है। माताएं, बहने गृह प्रबंधन की अच्छी शिक्षिका होती है इसी के मद्देनजर पूरा संचालक मण्डल महिलाओं को समर्पित किया गया है अखिल भारतीय स्वरूप धारण करती जा रही यह पत्रिका दूरदराज के इन्टरनेट युजर के लिए भी awantikaindore.com साइट पर उपलब्ध है। अहमदाबाद से नरेशराजा ने नागर संस्कृति और संस्कार पर वृहदग्रंथ प्रकाशित होना चाहिए का ध्येय जयहाटकेश वाणी के माध्यम से नागर समाज के समक्ष रखा है और प्रसन्नता का विषय तो यही है कि इसी अंक में शिवपुरी से श्री प्रेमनारायणजी नागर ने मालवा क्षेत्र का नागर (ब्राह्मण) समाज तब और अब से इसकी शुरुवात भी कर दी है अब बांसवाड़ा राजस्थान, गुजरात, उत्तरप्रदेश की बारी है। इतनी वेबसाइट्स और पत्रिकाओं में प्रत्येक शहर गांव के नागर अपने समाचार, संस्कारों, रिवाजों को पहुंचाने का संकल्प कर ले तो नरेश राजा का संकल्प पूरा होने में कोई संदेह नहीं है। श्रीमती मनोरमा झा ने 'व्रत कथाये' और 'सोलह संस्कार' एवं 'रीति-रिवाज' के प्रकाशन से नागरी संस्कृति का दर्शन कराना आरम्भ कर दिया है अब तो हमें सिर्फ यही तय करना है कि क्या हम स्वयं समाचारों रिवाजों और संस्कारों के आदान प्रदान करने के लिए बांसवाड़ा के रंजन नागर की तरह तैयार है।

-मंजू प्रमोदराय झा
सी-20, सुविधी नगर, एरोड्रम रोड, इन्दौर
फोन 0731-2415602

भाजपा पार्षद श्री चन्द्रप्रकाशजी त्रिवेदी

एक बुलंद आवाज का द्वितीय पुण्य स्मरण

बांसवाड़ा। भाजपा पार्षद श्री चन्द्रप्रकाशजी त्रिवेदी जिसे पूरा नागर समाज 'मेरे लाल' के नाम से ही सम्बोधित करता था और दीदी श्रीमती नीमा त्रिवेदी की द्वितीय पुण्य तिथी पर अपनी अश्रुपुरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए 22 अप्रैल 2007 रविवार का सारा घटना क्रम मेरी आंखों के सामने घुमने लगता है।

भाजपा के पदाधिकारी कार्यकर्ताओं के साथ ही नगर पालिका के सभी पार्षद और नागर समाज के गण-मान्य लोगों की भारी भीड़ बांसवाड़ा के महात्मा गांधी चिकित्सालय के सामने उपस्थित थी और उनके जीवन रक्षा की दुआ कर रही थी मगर सबकी दुआएं व्यर्थ हो गई और दोनों एक साथ अपनी जिन्दगी के महज चौथे दशक में ही ईश्वर को प्यारे हो गये। बांसवाड़ा में पडोली गोर्धन नामक स्थान पर कलाजी राठौर का स्थानक है यहां भक्तगण अपने श्रद्धासुमन चढ़ाने जाते है, मन्नत मांगते है और अपने जीवन की किसी भी समस्या का समाधान भी मांगते है जिजाजी दीदी से बहुत प्रेम करते थे वास्तव में दोनों ने प्रेम किया और उस प्रेम विवाह को दोनों के माता-पिता ने स्वीकार कर शादी कर दी।

जिजाजी ने एक छोटी सी पान की दुकान पर अपनी आजीविका आरम्भ की थी अपनी आदत के मुताबिक दोपहर 11 बजे दीदी का पान बनाकर घर पहुंचे वहां से दीदी को लेकर मोटर-साइकल से कलाजी राठौर के लिए प्रस्थान किया 20 किलोमीटर का रास्ता तय किया था कि सामने से आने वाली एक निजी बस ने उन्हें अपनी चपटे में ले लिया और दोनों एक साथ हम सफर हम राज की तरह अपने इकलोते पुत्र विक्की को छोड़कर स्वर्गवासी हो गये बांसवाड़ा के सभी समाचार पत्रों की सुर्खियां थी एक बुलंद आवाज खामोश हो गई नगर पालिका में उनकी दंबग और बेबॉक आवाज गुंजती ही रहती थी उनका युवा मन जनता की समस्याओं के समाधान के लिए अपनों से भी लड़ने में नहीं हिचकते थे। उनके पिता श्री मणीशंकरजी त्रिवेदी सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया में अधिकारी और ओडीटर पद पर बम्बई कलकत्ता में कार्य कर सेवा निवृत हुए एक धार्मिक प्रवृत्ति के गृहस्थ है उनकी वृद्धावस्था में यह एक कुठाराघात ही था और बारहवी में शिक्षा प्राप्त कर रहे पोते का भविष्य सवारने की चुनौती।

जीजाजी को कुछ लोग कठोर और पत्थर दिल मानते थे सच पूछो तो नागर समाज की माताएं भी शोले फिल्म की तरह बच्चों को डराया करती थी "चल मेरे लाल के पास चल वो ही तुझे डांटेंगे, समझाएंगे।" पता नहीं क्यों? सब उनसे डरते थे और लोग उनके नाम से डराते रहते थे मैं तो सहज भाव से उनकी दुकान से कभी भी बिना डरे टॉफी बिस्किट ले आती थी।

शादी ब्याह में बैंड, घोड़ी, लाइट की व्यवस्था के साथ ही स्वयं नाचते हुए वर और बारात को गंतव्य तक पहुंचाते थे। फिर टेन्ट हाउस का सामान भी रखना आरम्भ कर दिया जिसका रखरखाव दीदी स्वयं कर लेती थी कोई भी काम छोटा नहीं होता उन्होंने किसी काम में शर्म महसूस नहीं की धीरे-धीरे नागरों ने अपनी समस्याओं के लिए उन्हें याद करना आरम्भ कर दिया बारिश के दिन थे एक अंत्येष्टी में वो गये वहां सूखी लकड़ी की समस्या ने उन्हें झकझोर दिया अपने हमउम्र लोगों को एकत्र किया और उनकी टीम ने व्यवस्था का सारा जिम्मा अपने उपर ले लिया बांस, बल्ली, रस्सी, जलाऊ लकड़ी, कंडे, घी, कपुर की व्यवस्था से दुख सन्तप्त परिवारों को राहत हो गई। अचानक नगरपालिका के चुनाव घोषित हो गये भाजपा ने त्रिवेदीजी को अपना उम्मीदवार बनने को राजी कर लिया उनके खिलाफ कांग्रेस ने कई युवाओं को टिकट का ऑफर दिया परन्तु सभी ने इन्कार कर दिया जिससे प्रतिक स्वरूप दूसरे समाज के व्यक्ति को टिकट देकर अपनी हार स्वीकार कर ली।

नागरवाड़ा के चोरा चौक और अपनी पान की दुकान के पास ही रामजी और शिवजी का मंदिर है जिस पर शरारती तत्वों ने अपना कब्जा कर लिया था उनकी टीम ने वहां फिर से धार्मिक वातावरण स्थापित कर बच्चों को हनुमान चालिसा और रामरक्षा स्त्रोत से साक्षात्कार करवाया। बांसवाड़ा के संत नासिक की चर्तु सम्प्रदाय अखाड़ा पंचवटी नासिक में महंत की गादी से दिवंगत हुए महंतश्री दीन बन्धुदासजी (महाराजश्री) की प्रतिमा स्थापित करवाई। परन्तु एक बहु प्रतिक्षित महालक्ष्मी की प्रतिमा स्थापना की उनकी लालसा अपूर्ण रह गई हो सकता है कि यह काम उन्होंने आने वाले नये युवाओं के लिए छोड़ दिया हो।

-अभिलाषा अमित त्रिवेदी
नागर वाड़ा बांसवाड़ा
मो. 09413947938

"जिन्दगी में तू किसी के काम आना सीख ले"

विश्व की महान विभूतियां, भारतीय संस्कृति के जनक, प्रसिद्ध साहित्यकार, कविगण, महान वैज्ञानिक, संतगण जिन्होंने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये सतत संघर्ष किये। स्व प्रेरणा, आत्मविश्वास और कर्तव्य परायण के गुणों से वे सफलता के शिखर पर पहुंचे।

मानव जीवन का श्रेष्ठ धर्म यही है कि अपने लिये कुछ कर गुजरना क्योंकि व्यक्ति स्वयं अपने भाग्य का विधाता है। भाग्य को जागृत करने के लिये उपर्युक्त गुण होना आवश्यक है इसी बल से बुद्धि का विकास होता है और उपर्युक्त मार्ग अपनाने से जीवन का सही उद्देश्य चुनने में सहायता मिलती है।

व्यक्ति को अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिये अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, ऐसे समय में दृढ़ निश्चय होकर अपने कर्मपथ पर चलते रहना चाहिए। एक विद्वान साहित्यकार ने कहा है "अपने दुःख में रोने वाले मुस्कुराना सीख ले। दूसरों के दर्द में आंसू बहाना सीख ले। जो खिलाने में है मजा, आप खाने में नहीं। जिन्दगी में तू किसी के काम आना सीख ले। तुझे तेरा लक्ष्य ओझल न हो, कदम मिलाकर चल। सफलता तेरे कदम चुमेगी, आज नहीं तो कल।"

जन आलोचना से विचलित नहीं होता है बल्कि धनुर्धारी अर्जुन की परीक्षा में लक्ष्य को ही ध्यान रखना है। इस संसार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसके जीवन में 'भाग्योदय' का अवसर न आया हो, किन्तु जब वह देखता है कि वह व्यक्ति उसका स्वागत ही नहीं कर सकता वह उल्टे पैर लौट जाता है। अतः समय आने पर स्वविवेक से आगे पीछे गम्भीरता से मनन कर अपने लक्ष्य का निर्धारण कर लेना चाहिए। अपने विवेक की परिपक्वता हेतु माता-पिता गुरुजन, संत गणों का सदा आशीर्वाद लेते रहना चाहिए। विवेक की जागृता हेतु ध्यान, ज्ञान और कर्म योग प्रमुख है। श्रीमद् भागवत गीता में भी भगवान कृष्ण अर्जुन को यही शिक्षा देते हैं कि "सुख-दुखे समेकृत्वा, लाभा ला भौजया जयौ।" अर्थात जय पराजय लाभ हानि और सुख-दुख को समान समझने वाला ही विवेकी है। जिसमें विवेक जागृत हो जाता है वह अपना मार्ग स्वयं खोज लेता है। इसी ग्रन्थ में पुनः भगवान कृष्ण ने कहा है

"कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
माँ कर्मफल हेतु भूर्मा, ते संगस्त्व कर्मणि"

अर्थात तेरा कर्म करने में ही अधिकार है उसके फलों में नहीं इसलिए हे अर्जुन तू अपने कर्मों के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।

वर्तमान के भौतिक वातावरण की चकाचौंध शिक्षा के प्रचार, प्रसार से देश के बड़े शहरों में शिक्षा व्यवसाय अपनी गहरी जड़ें जमा रहा है। विदेशों में अध्ययन हेतु अनेक जगह प्रशिक्षण केंद्र खुलते जा रहे है। भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने वाले स्कूल कालेज बहुत कम दिखाई देते हैं इसका प्रमुख कारण उच्च शिक्षा, तकनिकी शिक्षा की ओर भीड़ बढ़ती जा रही किन्तु साहित्य,संस्कृति की भीड़ बहुत कम दिखाई देती है।

आज से 10-15 वर्ष पूर्व एक उच्चाशिक्षा प्राप्त युवक को कठिन परिश्रम कर तकनिकी शिक्षा हेतु अपना रास्ता खोजना कठिन होता था केवल मेघावी 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले ही संस्थानों में प्रवेश पा सकते हैं जिससे शिक्षा का स्तर व व्यवसायिक दक्षता की कद्र होती थी। वर्तमान में 10 से 20 प्रतिशत अंक व्यवसायिक परीक्षा मंडल से प्राप्त होने पर प्रवेश मिल रहा है जिसके कारण शिक्षा का स्तर व गुणवत्ता का पता चल रहा है। ऐसे छात्र प्रवेशोपरान्त विषय की कठिनता से बीच ही में सीट छोड़कर चले जाते हैं। ऐसी स्थिति में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु सही विषय अपनी योग्यता के मान से उसे स्वयं चुनना है जिसमें वह पूर्ण सफलता अर्जित कर सके। लक्ष्य प्राप्ति के संक्षिप्त सूत्रों को ध्यान से समझे। अपने विवेक से फेकल्टी का चयन करें। इसके अध्ययन में नियमित रहें।

अपने गुरुजनों, सीनियर मित्रों से कठिनाईयों को हल करावें। विषय का समग्र अध्ययन करें। पूर्व परीक्षा प्रश्नों को स्वयं हल कर पत्रिकाओं का अध्ययन करे जिसमें संबंधित विषयों का मार्गदर्शन हो। समय-समय पर विश्वविद्यालयीन शिविर, मार्गदर्शन शिविरों में उपस्थित रहें।

पढ़ाई के दिनों में अपने मन और विवेक को एकाग्र रखें। सदा नियमित समय पर दैनिक कार्य करें। अपनी वेशभूषा शिष्टाचार का ध्यान रखें। अपने गुरुजन, संतगण घर के वरिष्ठ सदस्यों का आदर करें उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करें। अपने जीवन में समय बद्धता और अनुशासन का कठोरता से पालन करें। मित्रों के साथ व्यर्थ चर्चा नहीं करें। अपने उपयोगी विषय पर, सामान्य ज्ञान पर चर्चा करें। बोलचाल की भाषा में इंग्लिश स्पिकिंग पर अभ्यास करें। आप अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं यदि आपने अपने जीवन को एकाग्र किया है तो आपको स्वतः अनुभूति होती कि आपने जो प्रयास किये हैं उसमें आप सफल होते स्वतः नजर आएंगे।

-नवीनचन्द्र रावल
155-ए, तुलसी नगर, इन्दौर
फोन 0731-2553153

बाबा से ऐसे प्रमाण मिले दीक्षित को

सन् 1917 में दशहरे के बाद, काका महाजनी के सेठ ठाकरसे के बेटे ने महाजनी को मुंबई में कहा कि वे सांई बाबा के पास जाकर उनके पिता (यानि सेठजी) के स्वास्थ्य के विषय में पूछकर आएं। काका महाजनी ने सलाह दी कि उन दिनों दीक्षित शिरडी में ही हैं, उन्हें इस विषय में लिखा जाए और सारी खबर ले ली जाए। लेकिन सेठ के बेटे ने जिद्द करते हुए काका को स्वयं ही शिरडी जाकर बात करने के लिए कहा। यह बात मुंबई में शाम पांच बजे हो रही थी। उसी समय बाबा ने शिरडी में दीक्षित को मुंबई में काका महाजनी और सेठजी के बेटे के बीच में हो रही बात कह सुनाई।

जब अगले दिन काका महाजनी शिरडी आए और सेठ जी के स्वास्थ्य की बात बाबा से की तो बाबा ने दीक्षित से कहा, देखा, काका ने मुझ से वही बात बोली है जो कल शाम मैं तुम्हें बता चुका हूं। तब काका महाजनी और दीक्षित ने आपस में बातचीत करने के बाद जाना कि बाबा को हजारों मील दूरी पर घटित होने वाली हर घटना का पूर्वज्ञान होता है। अब दीक्षित को विश्वास हो गया कि बाबा को भूत, भविष्य व वर्तमान का पूर्ण ज्ञान है।

हजारों मील दूर की बातें सुन लेते थे बाबा

कहते हैं कि वेदों के रचयिता महान व्यास को भी भविष्य का पूर्ण ज्ञान नहीं था। एक बार व्यास के एक शिष्य दास ने उनसे पूछा कि उसकी मृत्यु कब होगी तो व्यास उसका उत्तर नहीं दे पाए। तब गुरु और शिष्य उत्तर जानने के लिए यम के पास गए। लेकिन यम भी उत्तर न दे पाए। अब ये तीनों मृत्यु के पास गए। मृत्यु भी प्रश्न का उत्तर न दे पाई। अब ये चारों काल के पास गए। वहां पहुंचते ही शिष्य दास की मृत्यु हो गई। तब काल ने अपने खाते में यह पद लिखा हुआ दिखायाः

यदा व्यासः च दासाः च, यमेन् मृत्युना सह
कालस्य गृहम् आयन्ति, तदा दासो मरिष्यति

अर्थात् जब दास व्यास, यम और मृत्यु के साथ काल के घर जाएगा तो उसकी मृत्यु होगी। बाबा को भविष्य का पूर्ण ज्ञान था। एक बार शिरडी में काका को बहुत तेज बुखार हो गया। तब बाबा ने काका से कहा- तुम अपने विले पार्ले वाले बंगले में जाओ। यह बुखार 'चार' दिनों यानि कुछ दिनों तक रहेगा। घबराने की कोई बात नहीं है। बुखार अपने आप ठीक हो जायेगा और तुम स्वस्थ हो जाओगे। बिस्तर पर मत पड़े रहना। रोज की तरह सीरा खा लेना। बाबा की आज्ञा ले काका साहेब विले पार्ले आ गए। वहां डाक्टर डिमोंटि ने बुखार को नवज्वर बताया तथा मरीज को बिस्तर पर ही रहकर दवा खाने की सलाह दी। लेकिन बाबा के आदेशानुसार काका ने बिस्तर से दूर रहकर सीरा (घी में पका हुआ दलिया या सूजी) का सेवन किया जो कि बुखार में रोगी को नहीं दिया जाता। ऐसा करने से बुखार और तेज हो गया। डाक्टर भी काका की इस हरकत से बहुत परेशान हुए। उन्होंने अपने एक सहयोगी डाक्टर मित्र को बुलाकर काका साहेब को उनकी बात न मानने से होने वाले दुष्परिणामों के बारे में बहुत समझाया। काका ने डाक्टर को समझाया कि बुखार कुछ दिनों में स्वयं ठीक हो जाएगा और वे डाक्टर को कोई दोष नहीं देंगे। डाक्टर डिमोंटि ने सोचा कि बेचारे काका बेकार में किसी फकीर के चक्कर में आ गए हैं। परन्तु जब काका की हालत बुरी से बदतर होकर अचानक ही नौवें दिन ठीक हो गई, तब सभी को बाबा के वचनों पर विश्वास हो गया।

-संकलन **श्रीमती शारदा मंडलोई**

नवरात्री की शुभकामनाओं के साथ
हम शॉपिंग के लिये आमंत्रित करते है
इन्दौर एवं प्रदेशवासियों को
हेलो बेबी शॉप फेमेली क्लब
नवजात शिशु से नये-नये मम्मी-पापा तक
विशेषः गर्भवती महिलाओं के लिए गारमेंट और अंडरगारमेंट

न्यूबॉर्न शॉपीः बेसमेंट
बेबी वियर्स, बेबी राइड्स, स्वींग्स् (झुले), बेबी कॉट्स, स्ट्रालर्स, प्रॅम्स, वॉकर्स, फिडर्स, विप्पल्स, टिथर्स, रेटल्स, सुदर्स, ट्रेनिंग कप्स, बेबी कॉस्मेटिक्स, डायपर्स, रिकॉर्ड बुक्स आदि

किड्स शॉपीः ग्राउंड फ्लोर
गारमेंट, अंडर गारमेंट, नाइटवियर, फुटवियर, टॉयज, साफ्ट टॉयज, डॉल्स, गेम्स, बुक्स, सीडीज एवं डीवीडीज आदि

टीनएजर्स शॉपी : 1st फ्लोर
गारमेंट, अंडर गारमेंट, नाइटवियर, फुटवियर, बेग्स एंड पर्सेस आदि

मेन्स एंड वुमेन्स शॉपी : 2nd फ्लोर
गारमेंट, अंडर गारमेंट, नाइटवियर, फुटवियर, कॉस्मेटिक्स, इमिटेशन ज्वेलरी, बेग्स एंड पर्सेस, बेड शीट्स एवं कवर्स, टॉवेल्स आदि

रेस्टारेन्ट : 3rd फ्लोर
शीघ्र ही प्रारंभ

स्थान- हेलोबेबी हाउस, कोठारी मार्केट चौराहा, एम.जी. रोड़, इन्दौर फोन 2531107

नागर समाज जिला झाबुआ

झाबुआ (एस.टी.डी.कोड 07392)

1. श्रीमती आशा महेशजी (भोले) नागर 093032-45842
2. श्री अजय महेशजी (भोले) नागर 093014-79232
3. श्री अजय शंकरलालजी (कोठारी) नागर 94254-86378
4. श्री अनमोल सुभाषजी नागर 94066-72972
5. श्री देवेन्द्र शंकरलालजी (कोठारी) नागर 94248-62547
6. श्री धर्मेन्द्र प्रकाशचन्द्रजी नागर 94068-10809
7. श्री द्विजेन्द्र बालकृष्णजी व्यास 94066-43111
8. कु. डिम्पल राजेशजी नागर 94240-64104
9. श्री घासीराम किशनलालजी नागर 94259-25536
10. श्री हरिविट्ठल पन्नालालजी (कोठारी) नागर 94068-71331
11. श्री हेमेन्द्र घनश्यामजी नागर 94254-86766
12. श्री जितेन्द्र प्रकाशचन्द्रजी नागर 94250-33145
13. श्री कपिल महेशजी (भोले) नागर 94245-21075
14. श्रीमती लीना राजेशजी नागर 94240-64104
15. श्री लक्ष्मीकांत घनश्यामजी नागर 98275-12346
16. श्री महेश (भोले) रघुनाथजी नागर 98270-70250
17. श्री मितेश नारायण प्रसाद नागर 94240-65991, 245274
18. श्रीमती मंगला नारायण प्रसाद नागर 94074-04941
19. श्री नारायण प्रसाद निर्भयकुमारजी नागर 94259-25087
20. श्री निलेश घनश्याजी नागर 94250-33190
21. श्री ओमप्रकाश घासीरामजी नागर 94250-70839
22. श्रीमती पुष्पा पन्नालालजी (कोठारी) नागर 243297
23. श्री पंकज नारायण प्रसादजी नागर 94240-64318
24. श्री प्रवीण रघुनाथजी नागर 245306
25. श्री राजेश पन्नालालजी (मेहता) नागर 94251-02276
26. श्री राकेश कुमार घनश्यामजी नागर 94259-70953
27. श्री रजनीकांत महेशजी (भोले) नागर 94259-44457
28. श्रीमती सरोज प्रकाशचन्द्रजी नागर 94240-65844
29. श्री सुभाष घासीरामजी नागर 94251-92147
30. श्री शशांक ओमप्रकाशजी नागर 94250-70939
31. श्रीमती वन्दना द्विजेन्द्रजी व्यास 94068-84771
32. श्री विट्ठलालाल हीरालालजी नागर 99939-83511
33. श्री वासुदेव मोतीलालजी (मोदी) नागर 94254-86172

पेटलावद

1. अतुल शिवनारायणजी नागर 94254-35068
2. श्री भरतलाल माधवलालजी नागर 97558-27937
3. श्री भविष्यकुमार महेशजी नागर 97553-55443
4. श्री चेतन प्रहलादजी नागर 94259-10376
5. श्री दिनेशचन्द्र शंकरलालजी नागर 99360-41091
6. श्री गोविन्दलाल दामोदरजी नागर 94240-63236
7. श्री गजेन्द्र दिनेशचन्द्रजी नागर 98263-36335
8. श्रीमती इन्दिरा चेतनजी नागर 94259-10374
9. श्री कृष्णकान्त रतनलालजी नागर 94254-35055
10. श्री कृष्णकान्त भागीरथजी नागर 94259-44634
11. श्री कृष्णचन्द्र गंगारामजी नागर
12. श्री कैलाशचन्द्र भागीरथजी नागर 94254-94881
13. श्री मांगीलाल मनोहरलालजी नागर 99260-41117
14. श्रीमती मंजुला मांगीलालजी नागर 94240-19690
15. श्री मोहनलाल गिरधारीलालजी नागर 94254-94881
16. श्री महेशकुमार सुरेन्द्रजी नागर 97558-28028
17. श्रीमती मंजुला महेशकुमारजी नागर 94259-73020
18. श्रीमती मंजुलता दिनेशचन्द्रजी नागर 99260-40972
19. श्रीमती मोनिका विशालजी नागर 94071-06691
20. कु. महिमा विनोदजी नागर 99937-61451
21. श्री नटवरलाल रमेशचन्द्रजी नागर 99264-89333
22. श्री परेश भरतलालजी नागर 94259-44550
23. श्री प्रकाशचन्द्र गंगारामजी नागर 98267-80167
24. श्री प्रहलादचन्द्र माधवलालजी नागर 94259-10376
25. श्री राजेश मनोहरलालजी नागर 99260-41115
26. श्री राजेश प्रहलादचन्द्रजी नागर 99818-76868
27. श्रीमती रेखा परेशजी नागर 94066-74899
28. श्री उपेन्द्र भरतलालजी नागर 94254-87195
29. श्री उदय गिरधारीलालजी नागर 99264-28136
30. श्री विट्ठलालाल शंकरलालजी नागर 99260-41134
31. श्री विनोद विट्ठलालजी नागर 94254-87224
32. श्री वरुण विनोदजी नागर 94254-87224
33. श्रीमती वन्दना उपेन्द्रजी नागर 97531-2850
34. श्री वासुदेव गिरधारीलालजी नागर 99260-45357
35. श्री विजय गोविन्दलालजी नागर 99936-78498
36. श्री विजय दिनेशचन्द्रजी नागर 99264-64588
37. श्री विशाल कृष्णकांतजी नागर 94259-70493

पिटोल (एस.टी.डी.कोड 07392)

1. श्रीमती अनिता राजेन्द्रप्रसादजी नागर 94254-35068
2. श्री अनिरुद्ध जगदीशचन्द्रजी नागर 94259-07520
3. श्री बालकृष्ण पुनमचन्दजी नागर 94240-63853
4. श्री भरतलाल पुनमचन्दजी नागर 94248-62087
5. श्री दिपेश राजेन्द्रप्रसादजी नागर 94259-46390
6. श्री दिनेशचन्द्र सुखनंदनजी नागर 94240-62533
7. श्री हिमांशु रामेश्वरजी नागर 94245-49624
8. श्री जगदीशचन्द्र दौलतलालजी नागर 07392-285247
9. श्री कैलाशचन्द्र मोतीलालजी (मोदी) नागर 94240-63847,285314
10. श्री कपील प्रकाशचन्द्रजी (मोदी) नागर 94240-63847
11. श्रीमती कोशल्या सदाशिवजी नागर 285251

12. श्री किरण रामकृष्ण नागर	94068-84661
13. श्री नितेश बालकृष्णजी नागर	94245-19875
14. श्री प्रकाशचन्द्र मोतीलालजी (मोदी) नागर	94259-35662,285241
15. श्री प्रतिक जगदीशजी नागर	94259-04288
16. श्री पुनमचन्द किशनलाल नागर	94259-35670,285222
17. श्री राजेन्द्र प्रसाद पुनमचन्दजी नागर	94248-17255,285255
18. श्री राजीव मधुसुदनजी नागर	94066-10646
19. श्री रामकृष्ण पुनमचन्दजी नागर	94240-71187
20. श्री डॉ. राहुल बालकृष्णजी नागर	94240-63857
21. श्री सुखनंदन दौलतलालजी नागर	285312
22. श्री सदाशीव रामलालजी नागर	94259-72756
23. श्री सतीश जगदीशजी नागर	94066-82197
24. श्री संजय पुनमचन्दजी नागर	94254-36615
25. श्रीमती सुमन रामेश्वरजी नागर	285011
26. श्रीमती साधना जगदीशजी नागर	94257-04288
27. कु. प्रेक्षा जगदीशजी नागर	285141

मेघनगर

1. श्री महेन्द्र प्रसाद निर्भयकुमारजी नागर	94240-95835
2. श्री पुष्पेन्द्र रमेशचन्द्रजी नागर	94259-43769
3. श्री पुरुषोत्तम सुभाषजी नागर	94259-53339
4. श्री सुभाष पन्नालालजी नागर	94240-32160
5. श्रीमती शकुन्तला महेन्द्रप्रसादजी नागर	94259-72017
6. श्री सुनिल निर्भयकुमारजी नागर	94245-20198

निवेदन है श्रद्धा से

परम श्रद्धेय
निवेदन है श्रद्धा से,
बनी रहे श्रद्धा
हमारी
आप में
विकृति न जन्म ले
मध्य में
ताकि श्रद्धा का ह्रास या
अवसान न हो
श्रद्धा दिवंगत हो
अमर हो जायेगी
लेकिन,
आप कालजयी नहीं
बन पायेंगे
इसलिये हमारा
छोटा सा निवेदन
स्वीकार करो और
श्रद्धा स्व प्रेरित
अमर हो
ऐसा कार्य करो।

वह परीक्षित है

परीक्षा के लिये आये व्यक्तित्व ने पूछा
परीक्षित की पहचान क्या है?
उत्तर मिला
जिसके प्रश्नों के उत्तर में पुराण बन जाये
आजन्म विरक्त शुक जिसे स्वबोध कराये
शरीर को तज जो ब्रह्म को पाये
तक्षक शरीर का अग्नि संस्कार करे
वह परीक्षित है
जिसे आत्म बोध हो जाये
शरीर की भ्रांति न रहे
जिसका अग्नि संस्कार भी
तक्षक करे
वह परीक्षित है
परीक्षा के द्वारा जो
परखा जाये
परिणाम जाये
परिणाम से न क्लान्त हो
न अतिरेक दिखाये
सामान्य सा अद्वितीय
वह परीक्षित है।

-व्रजेन्द्र नागर, इन्दौर

नागर इन्टर प्राईजेस

दलहन एवं तिलहन (अनाज) के क्रेता एवं विक्रेता

प्रोपा.
एल.एन. नागर
राजेश नागर,
सुरेन्द्र नागर

शादी एवं पार्टी के लिये मारुती वेन एवं अन्य वाहन उपलब्ध है

रेल्वे स्टेशन चौराहा, ए.बी. रोड, शाजापुर, (म.प्र.) फोन 228711 मो. 9424000477, 9425034721, 9893800501

उदयपुर में 'हाटकेश्वर हुंडी' योजना साकार

उदयपुर (राजस्थान)। अभिनव प्रयोग-संचय पात्र वितरण नागर समाज (नागर मंडल संस्थान गणगौर घाट) उदयपुर (राजस्थान) उत्साह पूर्वक सफल प्रतिसाद वर्जन। नागर समाज ने आर्थिक-सुदृढ़-संबल हितार्थ उक्त प्रयोग क्रियान्वित किया समाज ने सदस्यों को 'हाटकेश्वर हुंडी' के प्रति आकर्षित करते हुए लगभग 60 से 75 बचत बॉक्स के अनुरूप रीपिट किये स्लाटेड संचय पात्र प्रत्येक परिवार को वितरित किए। संचय-पात्र क्रमांकित हो परिवार के नामांकित हुए सदस्यों से निवेदनार्थ अपील की गई। 'कुलदेव हाटकेश्वर भगवान शंकर की पूजा-अर्चना/पाटोत्सव/मंदिर विकास/समाज हेतु अपनी मासिक आय में से एक आंशिक भेंट राशि निकालकर प्रदत्त पात्र में संचित करें। इसके अतिरिक्त पारिवारिक मंगल उत्सवों पर भी श्रद्धानुरूप हुंडी में सहयोग कर पात्र संचय में वृद्धि करें'। संचय-पात्र लगभग वर्ष में दो बार संभवतः हाटकेश्वर जयंति एवं नवरात्रि पर सदस्यों से एकत्र संचित राशि सदस्य से प्राप्त कर संचय पात्र पुनः रीपीट करके आगामी संचय हेतु सदस्य को लौटा दिया जावेगा। समाज का उत्साहजनक प्रतिसाद प्राप्त हुआ एवं नागरवाड़ी में स्थित पूरातन श्री हाटकेश्वर भगवान देव स्थान के विकसित जीर्णोद्धार की दिशा संभव हो पायी। गुरुवर संत श्री कमल किशोरजी नागर द्वारा किसी उत्सव समारोह में आशीर्वचन उद्‌बोधन में नागर समाज को परिवार के प्रत्येक सदस्य एक रुपया प्रतिदिन संचय कर समाज के विकास-जनहितार्थ कार्य हेतु समाज को देने हेतु इशारा किया था।

-पुरुषोत्तम जोशी

तुझे जीवन की डोर से बांध लिया है

उदयपुर (राजस्थान)। चि. श्री विजय सुपुत्र श्रीमती प्रमिला पति स्व. नगेन्द्र नागर सुपोत्र श्रीमती केशरबाई उदयपुर का शुभविवाह नीमच निवासी श्रीमती कुसुमलता-सत्यप्रकाशजी नागर की सुपुत्री चि.सौ. सपना के साथ दिनांक 27-2-09 को नीमच में सकुशल सानन्द सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर समाज के उपस्थित गणमान्य अतिथियों ने सुखी दाम्पत्य-जीवन के प्रति आशीर्वाद प्रदान किया।

उदयपुर (राजस्थान)। चि. मितेश नागर सुपुत्र श्रीमती सीमा-शंकरलाल नागर उदयपुर का शुभविवाह चि. सौभाग्यवती कीर्ति व्यास सुपुत्री श्री शरद कुमार व्यास के साथ रतलाम (म.प्र.) में दिनांक 14-2-2009 को आत्मीय उत्सवी वातावरण में सानन्द सम्पन्न हुआ उपस्थित स्वागतार्थियों ने वर-वधु पर आशीर्वचन की वर्षा से समारोह को सराबोर किया।

-पुरुषोत्तम जोशी

श्री हाटकेश्वर जयन्ती महोत्सव

नई दिल्ली। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी अपने नागर समाज के कुलदेव बाबा श्री हाटकेश्वर नाथजी की जयन्ती (पाटोत्सव) बड़ी धूम धाम तथा हर्षोल्लास के साथ 8 अप्रैल 2009 बुधवार के दिन, मंदिर श्री हाटकेश्वर नाथजी प्रांगण में मनाई जा रही है।

महोत्सव कार्यक्रम निम्नानुसार हैं :-

प्रातः 10.00 बजे-मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण, प्रातः 10.30 बजे-रुद्रीपाठ एवं रूद्राभिषेक, प्रातः 3.00 से 5.30 बजे तक- महिला कीर्तन, मेहमान कलाकारों द्वारा भजन गीत और संगीत, सायं 5.30 से 7.00 बजे तक-अध्यक्ष द्वारा नागर समाज के आगन्तुक सदस्य तथा विशिष्ट महमानों का स्वागत, सचिव द्वारा पिछले वर्ष के कार्यक्रमों की रिपोर्ट समाज के होनहार मेघावी छात्रों को मंडल द्वारा पुरस्कार वितरण, सायं 7.00 बजे-बाबा हाटकेश्वर नाथ जी की सामूहिक आरती तदोपरान्त प्रीतिभोज (न्यात), रात्रि 10.00 बजे तक।

राजधानी में भगवान शिव की कृपा प्राप्ति के लिये यत्न

दिल्ली के दिल चांदनी चौक के कूंचा लट्टू शाह दरीबा कला स्थित नागरों के इष्ट देव-देवों के देव महादेव के प्राचीन मंदिर हाटकेश्वर महादेव मंदिर में महाशिवरात्री का पर्व दिल्ली तथा आसपास के नागर बन्धुओं ने अपने इष्ट मित्रों तथा परिवार सहित बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया।सर्वप्रथम भगवान शिव का रुद्राभिषेक तथा भोले नाथ की कृपा प्राप्ति के लिए मंदिर परिसर में यज्ञ तथा हवन मंदिर के विद्वात पं. श्री महेश जी द्वारा बहुत ही श्रद्धा-भक्ति तथा विश्वास के साथ संपन्न कराया गया।इस पावन पर्व पर नागर मण्डल के प्रधान श्री सी.एम. व्यासजी ने उपस्थित नागर बन्धुओं से अनुरोध किया कि आप सब अपने इष्टदेव भगवान शिव तथा अपने समाज के प्रति जागरुक रहेंगे तथा हाटकेश्वर नाथ नागर मण्डल को अधिकाधिक सहयोग देकर अनुग्रहित करेंगे। अंत में आरती तथा प्रसाद के साथ श्रद्धा पूर्वक पर्व सम्पन्न हुआ।

-सुधीर पांड्या
सरस्वती विहार, दिल्ली
मो. 09868048080

जीवन के कई पाठ सिखा गई दादीजी

दादीजी, हाँ इसी नाम से तो पुकारा था मैंने, जब उन्हें पहली बार मिली थी। जय हाटकेश वाणी में उनके लेख पढ़कर हम सभी को उनसे मिलने की इच्छा थी। इसलिये अभी कुछ समय पूर्व ही हम इन्दौर गए। वहां जाकर पता चला कि दादीजी पिछले 1 वर्ष से अस्वस्थ है, इतनी पीड़ा सहने के बाद भी उनके चेहरे पर गजब का तेज और आत्मविश्वास झलक रहा था। हमसे प्यार और सहजता से मिले और बहुत जल्द ही हमारे और उनके परिवार के बीच एक आत्मीय रिश्ता बन गया। मैंने महसूस किया कि दादीजी उस घर की नींव है। उनके घर और परिवार के लोगों में उनकी आत्मा बसती है, उन्होंने अपने परिवार को माला की तरह एक सूत्र में पिरो रखा है। वे हर वक्त अपने पति श्री शिवप्रसाद जी शर्मा का आधार स्तम्भ बनी रही और 1 मार्च 2005 को उनके दिवंगत हो जाने के बाद अपने भरे-पूरे परिवार को उन्होंने बखूबी सम्भाला व अपने तीनों बेटों की मार्गदर्शक बनी रही।

समाज के कल्याण में भी उनकी विशेष रुची थी, सामाजिक कार्यक्रमों में वे बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती थी। उन्होंने अपनी बेटी और बहुओं में कभी फर्क नहीं रखा, हमेशा अपनी बहुओं को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। उन्होंने नागर समाज को एक करने के लिये बहुत संघर्ष किये, उन्ही की प्रेरणा से उनकी बहुओं ने नागर समाज का प्रतिनिधित्व करने वाली पत्रिका 'जय हाटकेश वाणी' का प्रकाशन शुरु किया और सफलता पूर्वक निरंतर इसका प्रकाशन कर रहे हैं। जब मैंने दादीजी के प्रकाशित लेखों की प्रशंसा की तो उन्होंने उसी शैली में कहा कि मैं तो उज लिखूं जो अपणा आस-पास देखूं। जब मुझे पता चला कि दादीजी का देवगमन हो गया, तो मुझे बहुत बुरा लगा। उनसे हुई एक मुलाकात ने मुझे बहुत प्रभावित किया था, उनके प्रेम, उत्साह और हंसमुख स्वभाव ने मुझे उनकी तरफ आकर्षित किया। जब मैंने उन्हें मई में झाबुआ आने का आमंत्रण दिया था, तो उन्होंने बड़े प्यार से कहा था कि हो सका तो वे सपरिवार जरुर आएंगे। मुझे इस बात का दुख हमेशा रहेगा कि मैं अपने परिवार के बाकी सदस्यों को दादीजी से नहीं मिलवा सकी, जिनकी मैं अक्सर बातें किया करती थी। दादीजी ने अपने लेख में हमेशा उच्च आदर्शों, सेवाभावी बनने और संतोषी जीवन जीने की प्रेरणा दी है। वे अतिथि देवो भवः पर विश्वास करती थी। उनके परिवार के सदस्यों श्री दीपकजी, पवनजी, मनीषजी, संगीताजी, दुर्गाजी, सीमाजी, ज्योतीजी से मिलने पर मुझे ऐसा लगा कि यही तो उनके परिवार की परंपरा है। मार्च में प्रकाशित उनके लेख 'माँ को कोई विकल्प नी है....' का सार्थक भाव यही है कि आज दादीजी का कोई विकल्प नहीं है। भगवान उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें, और उनके परिवार को इस दुख से उबरने की शक्ति प्रदान करें। दादीजी इस दुनिया में न होते हुए भी अपने आदर्शों के साथ सदा हमारे साथ रहेंगी।

प्रस्तुति- डिम्पल नागर (मेहता) झाबुआ

एक और जीवन...

मैं एक और जीवन जीना चाहती हूं
उन्मुक्त आसमान में विचरण करती,
हवाओं को चीरते हुए, डाल-डाल डोलती
पंख पसारे, धरती को छोड़,
आसमां पाना चाहती हूं।
मैं एक और जीवन जीना चाहती हूं।
खुशबू बिखेर, मन को बहलाती
कांटों की शय्या पर लेटी, मुस्कुराती
तोड़ मुझे माली से दूर,
किसी के आंगन को संवारना चाहती हूं
मैं एक और जीवन जीना चाहती हूं।
सीप की बंद पलकों में समाई
अनगिनत लहरों के बीच में लहराई
उन पलकों से बाहर निकल,
किसी के गले का हार बनना चाहती हूं
मैं एक और जीवन जीना चाहती हूं।
हर रात को रोशन करती
अद्भुत सी अनुभूति लोगों को कराती
एक चांद के इर्दगिर्द चमकना चाहती हूं
मैं एक और जीवन जीना चाहती हूं।

-वाणी मेहता, पुणे
मो. 93267-11546

।। जय हाटकेश ।। ।। श्री गणेशाय नमः ।। ।। पितृ कृपा ।।

श्री नागर ट्रेडर्स

प्रोपा. सुखनन्दन नागर

मो. 9630999271

सदर बाजार पिटोल जिला झाबुआ म.प्र.

शरीर में दिन प्रतिदिन घटती है रामायण

आप में मुझमें हर एक के भीतर जो प्रकाश चमकता है, यह चेतन शक्ति श्री राम हैं। शरीर को अयोध्या कहते हैं अयोध्या जहां कभी युद्ध नहीं रामराज्य है। शरीर में जब तक शुद्ध चेतन तत्व (राम) का प्रभुत्व है संतोष है।

जब सीता रूपी (मन) हिरण्य मृग रूपी (लोभ) में विवश होता है तब रावण रूपी (अहंकार) सीता (मन) पर अपना काबू पा लेता है।

फिर सीता को वापस लाने के लिए पवन पुत्र हनुमान यानि (सांस) की जरूरत पड़ती है, फिर हनुमान (सांस) की सहायता से सीता (मन) को राम (शुद्ध चेतन तत्व) के पास लौटा सकते हैं। इसमें लक्ष्मण रूपी सजगता की जरूरत होती है। ऐसे हमारे अन्दर पूरी रामायण घटती है। जय गुरुदेव ।।

-श्रीमति मंजुला हरिधर याज्ञिक
40, बालाराम डे स्ट्रीट, कोलकाता
मो. 09433480369

एक स्वरचित अप्रकाशित गीत

मिल जाए किनारे जीवन के
सपने सच हो जाए तेरे मेरे मन के
डोर न टूटे छोर न टूटे,
मिल जाए किनारे जीवन के...
आज ही अपने 'कल' को देखें
समय करवटें लिये है जाता
भविष्य की उम्मीदें भी जागे
कल फिर सुनहरा कल आता
लिये पालकी खड़े रहो तुम
थके हैं न कहार कल के ...
संघर्षों की व्यथा कथा को
किसको सुनाते जायेंगे
व्यर्थ समय को गंवा दिया
मंजिल को कैसे पायेंगे?
स्नेह प्यार के दीप जलाये
खिल उठे मन के मनके...
सपने सच....

-सुभाष नागर 'भारती'
नागर मेडीकल स्टोर, अकलेरा-326033

महत्वाकांक्षा खत्म तो शांति की शुरुआत

दर्पण में देखकर हम तन का श्रृंगार तो कर सकते हैं, मगर अध्यात्म के दर्पण में मन का श्रृंगार करने में लग जाए, तो जीवन जीने की कला मिल जाएगी।

विचारों की निर्मलता और आचरण की पवित्रता ही धर्म है।

शरीर दीपक है, आत्मा ज्योति है।

वैभव के साथ विवेक, ज्ञान के साथ विनय, प्रभुत्व के साथ विनम्रता का होना, सतपुरुषो का लक्षण है।

हमारा पुण्य करने के लिये ज्यादा धन चाहना गलती है।

शान्ति वहां आरंभ होती है, जहां महत्वाकांक्षा समाप्त होती है।

-राजेन्द्र नागर
बी/73, वैभव नगर, कनाड़िया रोड, इन्दौर
फोन 2591732

जिसने सिद्धांतों के साथ कभी समझौता नहीं किया

मध्यप्रदेश का प्रमुख समाचार पत्र **दैनिक अवन्तिका**

इन्दौर-7, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड फोनः-0731-4085777 मो.-98277-71777

उज्जैन- 2, रानी लक्ष्मीबाई मार्ग फोनः-0734-2554455 फेक्सः-2559777

इन्दौर- 20, जूनी कसेरा बाखल, फोनः-0731-2450018 फेक्सः-2459026

आपके पत्र

हमारे यहां तो हैं आवभगत की परम्परा

माह फरवरी 2009 के अंक में सम्पादकीय लेख में सम्पादकजी द्वारा आयोजक एवं समाज के बंधुओं की व्यथा बताकर समाज को अपनी गलतियों से अवगत करवाया है, इस सार्थक पहल के लिये मैं आदरणीय श्रीमती संगीताजी को धन्यवाद देती हूं। यदि कोई अग्रणी होकर सामाजिक आयोजन करते है, तो वे बधाई के पात्र है, साथ ही उनका कर्तव्य है कि कार्यक्रम समिति बनाते समय हम जिस तरह सभी सदस्यों को अपने प्रभार सौंपते है उसी तरह कुछ सदस्यों को स्वागत प्रभारी बनाकर आगंतुको के स्वागत हेतु द्वार पर खड़े करें। यदि आयोजन में पधारने वाले समाजजनों को द्वार पर आत्मीय स्वागत मिलेगा तो वे आयोजन में अपना यथा संभव सहयोग देने का प्रयत्न करेंगे। मुझे खुशी है कि झाबुआ, मेघनगर एवं पिटोल परिषद् के संयुक्त सामाजिक आयोजनों में हमारे समाज के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री विट्ठलजी नागर, पधारने वाले समाजजनों के स्वागत हेतु द्वार पर स्वेच्छा से खड़े होकर सबका अभिवादन करते है। यदि हम सभी की सोच ऐसी हो जाए तो कोई नहीं कहेंगें 'क्यों नहीं आते समाजबंधु।'

-कु. डिम्पल नागर (मेहता) झाबुआ

सेवा निवृत्ति के बाद समाजसेवा शुरु

झाबुआ। आज जब शिक्षको ने शिक्षा को व्यवसाय बना रखा है, तब पिटोल क्षेत्र में नागर सा. के नाम से विख्यात श्री पूनमचन्द्रजी नागर समाज को एक नई प्रेरणा दे रहे हैं। 1992 में सेवानिवृत्ति के बाद वे वर्तमान में निजी विद्यालय में निःशुल्क सेवाएं दे रहे हैं, और आवश्यक होने पर बच्चों के घर जाकर भी शिक्षा प्रदान करते है जो वनवासी बालक-बालिकाएं स्कूल जाना बंद कर देते है उन्हें पत्राचार शिक्षा से आगे अध्ययन करने हेतु प्रेरित करते है। वे गरीब बच्चों को अपनी पेंशन से आवश्यक पुस्तकें खरीद कर देते हैं। पिटोल में कई कार्यों के लिये यहां से 15 कि.मी. दूर झाबुआ आना पड़ता है, यदि समाज की महिलाओं एवं बच्चों को आवश्यक वस्तुओं जैसे पुस्तकें, दवाईयाँ या अन्य कोई सामग्री लाना होती है तो बिना किसी स्वार्थ के श्री नागर सा.ला कर देते है। साथ ही पेंशनरों की परेशानियों का निराकरण बिना कोई शुल्क लिये करवा देते है। शिक्षा के क्षेत्र के अलावा सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में भी नागर सा.का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। किसी भी धार्मिक या सामाजिक कार्यक्रम में हमेशा अपनी उपस्थिति दर्ज करवाते है। शिक्षा के जगत में अनुकरणीय योगदान देकर नागर समाज का नाम गौरवान्वित किया हम आशा करते है कि हमारे युवा उनसे प्रेरणा लेकर समाज का नाम रोशन करेंगे।

-कु. प्रिती नारायण प्रसाद नागर (मेहता) झाबुआ

स्व. श्रीमती कलावती मेहता स्मृति पुरस्कार

पीपलरावां। विगत 26 फरवरी 09 को पीपलरावां में स्व. कलावती मेहता स्मृति पुरस्कार वितरण कार्यक्रम 'कांग्रेस सन्देश' दिल्ली के सम्पादक

श्री पंकज शर्मा के मुख्य आतिथ्य तथा क्षेत्रीय विद्यालय एवं प्रतिपक्ष उपनेता श्री सज्जनसिंह वर्मा श्री अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। वर्ष 2008 की हाईस्कूल परीक्षा में शा. कन्या हाईस्कूल पीपलरावां श्री छाया कु. भावना को विद्यालय में सर्वाधिक अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण होने पर मेहता परिवार पीपलरावां की ओर से स्थाई शील्ड प्रशंसापत्र एवं सम्मान राशि प्रदान कर पुरस्कृत किया गया। ज्ञात हो कि अपनी स्व. बहिन पूर्व प्रधानाध्यापिका श्रीमती कलावती मेहता (जिन्होने इसी कन्या विद्यालय में अपनी 35 वर्ष की सेवा अर्पित की थी) की पुण्यतिथि पर श्री त्रिभुवन लाल मेहता (से.नि.प्र.अ.) यह पुरस्कार अपनी ओर से प्रदान करते हैं। इस अवसर पर जिले के सम्मानीय नागरिक गण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन पत्रकार भूपेन्द्र नागर ने किया।

ECO TOUR CONSULTAN
Excellent Economic Excursion

We Arrange:-

TOURS	TICKTING	EVENTS
Corporate	Air (domestic & international)	Conferences
Honeymoon	Train (E-ticketing)	Parties
Individual	Bus booking	Shows
Religious	Taxi	Picnic
Educational	And all type of convinces	Cultural activities....

PLEASE CONTACT:- NAVIN NAGAR- 9893163021, SHWETA JHA-9300130848,
ECO TOUR CONSULTANT: 57-58, RNT MARG, CHAWNI CHOURAHA, INDORE

।। जय परशुराम ।। ।। श्री गणेशाय नमः ।। ।। जय परशुराम ।।

सर्व ब्राह्मण महासभा नागदा जं.

सामूहिक विवाह एवं सामूहिक यज्ञोपवित संस्कार

दिनांक २७ अप्रैल २००९ सोमवार

नागदा जं. जिला उज्जैन (म.प्र.)

सर्व ब्राह्मण महासभा, सर्व ब्राह्मण युवा सभा, सर्व ब्राह्मण महिला सभा

परम श्रद्धेय,

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सामाजिक प्रगति हेतु एवं अनावश्यक आडंबर, तनाव, श्रम, असमानता तथा अहंकार पूर्ण प्रदर्शन की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने हेतु सामूहिक विवाह एवं सामूहिक यज्ञोपवित एकमात्र विकल्प है। गत वर्षो से हम देखते आ रहे है कि विभिन्न समाजों में सामूहिक विवाह सफल हो रहा है। अतः भगवान परशुराम की प्रेरणा से सर्व ब्राह्मण महासभा नागदा ने २७ अप्रैल सन् २००९ को सामूहिक विवाह एवं सामूहिक यज्ञोपवित करने का निर्णय लिया है।

आपका पथ प्रदर्शन भरा सहयोग समाज हित के
इस आदर्श कार्यक्रम को सार्थकता प्रदान करेगा।

इसी निवेदन के साथ...

✧ विनयानवत ✧

-: सम्पर्क सूत्र :-

विजय प्रकाश मेहता
(नागर ब्रा.)
अध्यक्ष-सर्व ब्राह्मण महासभा नागदा
'होरी भवन' गांधी ग्राम कॉलोनी,
नागदा जं. जिला उज्जैन
फोन 07366-238367,
मो. 98270-85738

विजय व्यास
(चौबिस ब्रा.)
सागर स्टूडियो
हास्पिटल रोड़
नागदा जं.
मो. 99260-56608

विनोद गौतम
(आमेठा ब्रा.)
21, विक्रम मार्ग
उज्जैन दरवाजा
खाचरौद
मो. 94254-58684

प्रफुल्ल शर्मा
(हरियाणा गौड़)
संयोजक-
सर्व ब्राह्मण महासभा नागदा जं.
244, जवाहर मार्ग, बस स्टेण्ड
नागदा जं. जिला उज्जैन
मो. 99260-56648

-: संरक्षक :-

डॉ. अनिल दुबे
(गुर्जर गौड़)
179, श्री जी हॉस्पिटल,
रामसहाय मार्ग, नागदा जं.
मो. 94254-58873

श्री मोहनलाल उपाध्याय
(औदित्य ब्रा.)
शिव अम्बे डिजिटल स्टूडियो एण्ड एस.टी.डी.
रामसहाय मार्ग, नागदा जं.
मो. 98936-19910

श्री यशवंत कुमार दीक्षित
(महाराष्ट्रीयन ब्रा.)
इन्दू कॉलोनी, नागदा जं.
मो. 92296-06341

नियमावली एवं निर्देश सामूहिक विवाह 2009

❖ सामूहिक विवाह वैदिक रीति से विद्वान पण्डितों द्वारा सम्पन्न करवाया जावेगा। ❖ विवाह संस्कार पूर्णतः निःशुल्क रहेगा। वर-वधू पक्ष अपने साथ 35 सदस्य ला सकते है जिनकी भोजन व आवास व्यवस्था के लिये प्रत्येक पक्ष को 5100/-रु. सहमति पत्र के साथ जमा करना अनिवार्य है। ❖ सामूहिक यज्ञोपवित संस्कार के लिए 1100/-रु. प्रति बटुक राशि निर्धारित की गई है। यज्ञोपवित कार्यक्रम में संबंधित पक्ष 21 सदस्य ला सकेंगे। ❖ सामूहिक विवाह मण्डप में मामेरा व व्यक्तिगत व्यवहार मान्य नहीं होगा। ❖ वर एवं वधु पक्ष को वस्त्र, आभुषण व बर्तन प्रदान किये जावेंगे। ❖ समिति द्वारा निर्धारित नियमों का पालन करना अनिवार्य होगा। समिति को नियमों में परिवर्तन करने का अधिकार होगा। ❖ प्रत्येक पक्ष की और से 5 कार्यकर्ताओं का सहयोग अपेक्षित है। जिनके नाम कार्यक्रम के पूर्व समिति को दिया जावे। ❖ पवित्रता, अनुशासन एवं समयबद्धता अनिवार्य है। ❖ कार्यक्रम स्थल पर दिनांक 27/4/2009 को प्रातः 6 बजे तक उपस्थित होना अनिवार्य है। ❖ सहमति पत्र भरकर जमा करने की अन्तिम दिनांक 10 अप्रैल 2009 है।

नागर महिला मंडल की बैठक में प्राकृतिक चिकित्सा का प्रशिक्षण

इन्दौर। नागर महिला मंडल एवं अ.भा. महिला सभा विजयनगर शाखा के संयुक्त तत्वाधान में 21 मार्च 09 को मासिक बैठक सम्पन्न हुई। मूलतः शिक्षक श्रीमती संगीता विनोद नागर जो प्राकृतिक चिकित्सक एवं योग प्रशिक्षक हैं मार्गदर्शन में कार्यशाला, प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इसमें लगभग 40 महिलाओं ने हिस्सा लिया। श्रीमती संगीता नागर ने बताया कि मिट्टी में 20 गुण होते हैं। श्रीमती प्रियबाला मेहता, श्रीमती दुर्गा जोशी, श्रीमती दिव्या मंडलोई, श्रीमती सरला व्यास, अनिता पुरोणिक सहित 15 महिलाओं ने मिट्टी लेप उपचार की तकनीक से अनुभव प्राप्त किया। श्रीमती कुमुदनी तुरखिया ने अतिथियों का स्वागत किया तथा डॉ. रेणुका मेहता ने संस्था कार्यक्रम का परिचय दिया। इस अवसर पर श्रीमती मनोरमा नागर (मक्सी) श्रीमती चारुमित्रा नागर, श्रीमती अरुणा व्यास, श्रीमती गायत्री मेहता आदि सदस्याओं को नागर समाज की गतिविधियों एवं कार्यकारिणी का दायित्व संभालने के लिए पुरस्कृत किया गया। सभी व्यवस्थाओं का संचालन करते हुए समापन में श्रीमती शारदा मंडलोई ने आभार प्रदर्शन किया।

कुप्रथाओं का व्यक्तिगत विरोध जरुरी

दहेज और मृत्यु भोज जैसी समस्या अभी भी जस की तस बनी हुई है। दहेज लेना और देना दोनों अपराध है। यह बात सैद्धांतिक दृष्टिकोण से अब भी पालन की जा रही है, किन्तु व्यावहारिक दृष्टिकोण से नहीं। आज भी दहेज के चक्कर में कितनी ही बहू-बेटियां जिन्दा जलाई जा रही है। प्रतिदिन दहेज की बलिवेदी पर अत्याचार को सहन करती हुई लाड़लियों को शहीद होना पड़ रहा है।

सामाजिक चेतना के अभाव में दहेज के इस हरे-भरे वृक्ष को दिखावे से भरे महत्वाकांक्षी परिवार द्वारा प्रतिदिन सिंचित किया जा रहा है। इन सबमें दहेज के लोभ में और किसी से कुछ पाने और लेने की प्रवृत्ति ही साकार रूप में उजागर हो उठती है। व्यवहारिक धरातल पर भी आज हर कोई किसी से लेने में ही अपार आनन्द का अनुभव करता है। किन्तु किसी को कुछ देने में बहुत ज्यादा सोचता है। सामाजिक दृष्टि से दहेज के लोभी कुछ न कुछ लेने का बहाना अप्रत्यक्ष रूप से ढूंढ लेते हैं। दहेज का बदलता रूप भी वरपक्ष वाले कन्यापक्ष के बीच मनपसंद वस्तुओं के बीच देखने का प्रयास करते हैं। मृत्यु भोज के विषय में भी किसी की मृत्योपरान्त कभी कोई माई का लाल आयटम में सुधारवादी संशोधन कतई पसन्द नहीं करता। दहेज को आन्तरिक रूप से समर्थन देने वाले सामाजिक प्रतिष्ठा को ही बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं। हम समाज में जिसे प्रोत्साहन देना चाहिये उसे न देकर जीवन भर व्यर्थ के आडम्बर में उलझे रहते हैं। इन समस्याओं पर चिन्तन की आवश्यकता है। इस प्रकार की कुप्रवृत्ति पर व्यक्तिगत बाहिष्कार की आवश्यकता है।

प्रेषक- श्रीमती ज्योति-सोनू (योगेश) शर्मा

312, 'प्रभुकृपा' सुदामा नगर, अशोक मार्ग, उज्जैन

स्व. पंडित बापूलालजी शर्मा (नागर)

20 वीं पुण्य तिथि

निधन 11-4-1989

गौरजी महाराज

स्व. पंडित बापूलालजी शर्मा (नागर)

डेलची (माकड़ोन) परगना तराना जिला उज्जैन

शोकाकुल :- श्रीमती बरजू बाई पत्नी (आयु 102 वर्ष), पुत्र-पं. रामचन्द्र शर्मा कथावाचक, प्रोफेसर डॉ. रामरतन शर्मा, भतीजे-रामप्रसाद, रमेश, पौत्र-मनोहर, सन्तोष, ओम, अरुण, अनिल, मुकेश एवं सभी शर्मा परिवार

डेलची एवं 63, रवीन्द्र नागर, उज्जैन फोन 0734-2516603

या 'करपा' कई होय?

जद तम कोई से मिलो ने पूछो के तमारा कई हाल है तो उ बोले के सब तमारी 'कृपा' है। या कृपा ज करपा होय है मतलब कर ने पा। आजकल इनी करपा को जादा महेत्व हुई गयो है। मिलने वाला होय या काम-धंधा वाला वी तमारी मदद जदे ई करेगा जद तमने उनको कई भलो करयो होगा। मतलब पेलां करो फिर पाओ। जो लोग होण काम-धंधों करे उनके पतो है के सरकारी कामकाज में बिना पइसा दिये कई काम आगे नी बढ़े। पर आजकल यो पईसा वालों फलसफो भी सब जगे नी चले। पईसा तो सब कोई दई दे उका अतिरिक्त तम कई दई रिया हो? देश-दुनिया का जादातर काम आजकल कर-पा पे ज चली रिया है जो दूसरा को कई काम-भलो या परोपकार नी करे उके कई उम्मीद भी नी करती चइए। तम परिचित जगे बी जई ने खड़ा होवगा तो उ पेला सोचेगो के इनें अपनों कई काम करियो है. इका अलावा बिजनेस भी आजकल करपा पे ज आधारित हुई ग्यो है। आदमी उकेज बिजनेस दे जिससे उके कई फायदो होय नया आदमी होण के न तो बिजनेस मिले न उको भलो होय। नरी बार तो यो देखने में आय के भलो करने को बदलो भी नी मिली पाये। तम अगर जीवन में सफल होणो चाव तो करपा को महत्व समझी लो। सरकारी काम में पईसा का साथे सामने वाला को ऐसो फायदो कराव जो दूसरो नी कराय तो तमारे जादा फायदो मिलेगा इका वास्ते तमारे जादा-से जादा सम्पर्क बणई के रखणा पड़ेगा कई मालम सामने वालो कई काम बतई दे इका वास्ते पेला ज तैयार रो। नरी बार सामने वाला से आशा से ज्यादा मिली जाय तो उके बाद में उपहार दई के कर्जों उतार दो। मैंने पेलां एक लेख दियो थो 'यो लेन-देन को सौदो है' वैसो ज काम करपा को भी है। कोई करपा वरपा नी होय जैसो अपन करा उज अपने मिली जाया करे है। जो जित्तो ज्यादा करे उके उतनो जादा मिले। तो जीवन मे ंसफल होणे का वास्ते हमेशा सक्रिय रो ने अपना से जुडया लोग होण को भलो करता रो उना भला को फायदो तमारे जीवन में कदी ने कदी जरुर मिली जायगो और यो केणो भी छोड़ दो के बस तमारी कृपा है मन-ज-मन यो सोचो के या म्हारी करपा है हूं करतो जाऊं ने पातो जऊं।

-प्रभा शर्मा

(उपरोक्त लेख उन्होंने देहावसान से पूर्व लिखकर दिया था।)

आभार

दैनिक अवन्तिका के संस्थापक श्री गोवर्द्धनलालजी मेहता की लाडली एवं मासिक पत्रिका जय हाटकेश वाणी की संस्थापक **श्रीमती प्रभा शर्मा** के असामयिक निधन 23 मार्च 2009 पर संक्षिप्त सूचना पर अंतिम यात्रा में हिस्सा लिया उन सभी बंधुओं के प्रति आभार व्यक्त करते हैं जो शर्मा परिवार के दुःख में सहभागी बनें। इस दौरान श्रद्धांजली सभा में उज्जैन से पधारे मामाजी श्री सुरेन्द्र मेहता, पत्रकार बृजभूषण चतुर्वेदी, देवास से मोहन शर्मा, पीपलरावां से मनमोहन नागर, गिरजाशंकरजी नागर राऊ, लव मेहता-उज्जैन शिवांजली ट्रस्ट के श्री प्रवीण त्रिवेदी, अ.भा. नागर परिषद शाखा इन्दौर के श्री व्रजेन्द्र नागर, दवाई उत्पादक संघ के कैलाश जिंदल, सेवा सौरभ के श्री विष्णु गोयल, भाजपा नेता लक्ष्मी चंद शर्मा, श्री प्रदीप मेहता रतलाम ने श्रीमती प्रभा शर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। निवास- 20, जूनी कसेरा बाखल में आयोजित सांध्य बैठक में इन्दौर सहित प्रदेश भर के नागर जनों, प्रेस क्लब सदस्यों, रोटरी क्लब ऑफ इन्दौर ग्रेटर के सभी सदस्यों तथा व्यवसाय से जुड़े बंधुओं ने बड़ी संख्या में पधारकर शोकाकुल परिवार को ढांढस बंधाया। शर्मा परिवार आप सभी का हृदय से आभारी हैं। आपके अपनत्व एवं सहृदयता के हम सदैव ऋणी रहेंगे। **-सम्पादक**

|| जय हाटकेश || || श्री गणेशाय नमः || || पितृ कृपा ||

प्रियंका प्रिंटिंग प्रेस & डिजीटल फोटोकापी

हमारे यहां बिल-बुक, लेटर पेड, वैवाहिक पत्रिका,
कार्ड की आकर्षक प्रिंटिंग की जाती है।

प्रोपा. मांगीलाल नागर – मो. 94240-19690, 99260-41117

माधव कालोनी थांदला रोड़ पेटलावद

ये है सच्ची श्रद्धांजलि

विगत दो वर्ष पूर्व हाटकेश्वर जयंति पर मासिक पत्रिका जय हाटकेश वाणी का शुभारम्भ किया गया था। जिसकी प्रेरणा स्त्रोत श्रीमती प्रभा शर्मा ने नागर समाज के अनेक घरों में जाकर सतत सम्पर्क किया तथा सदस्य बनाएं। दरअसल समाजसेवा उनके रगों में थी तथा उसका प्रवाह वे नियमित देखना चाहती थीं। समाज के कई घरों में विवाह संबंधों की परेशानी देखकर उपरोक्त पत्रिका का विचार उनके मन में आया था। इसीलिए पत्रिका में विवाह प्रस्तावों का निःशुल्क प्रकाशन शुरु किया गया। इसी के साथ अमीर-गरीब, छोटे-बड़े सबको साथ लेकर चलने की प्रवृत्ति ने भी पत्रिका को शीघ्र ऊंचाईयां दी। समाज की महिलाओं को जागरुक बनाने तथा लेखन के क्षेत्र में प्रोत्साहित करने का भी उनका लक्ष्य रहा। उनका मार्गदर्शन पत्रिका के सम्पादन में मुझे लगातार मिलता रहा। मैं जब विवाह होकर इस घर में आई थी तो उन्होंने कहा था कि मैं अपनी बेटी ज्योति को विदा करने के बाद तुम्हें बेटी के रूप में अपने घर लाई हूं तथा उन्होंने मेरे साथ बाद में आई दो बहुओं को भी बेटी की तरह रखा तथा प्रयास किया कि हमारे बीच सामंजस्य बना रहें। पत्रिका के मामले में भी उनका यही सोच था कि यह समाज के घरों में नये आदर्श विचारों का सूत्रपात करे। परिवारों को जोड़ने के साथ अपने पूर्वजों को याद करते रहें तथा उसमें आध्यात्मिकता का भी समावेश हो। वे स्वयं भी धार्मिक वृत्ति की थी तथा पत्रिका के माध्यम से सामाजिक एवं धार्मिक क्रांति लाने का उनका स्वप्न था। क्योंकि बगैर आध्यात्मिकता के न व्यक्ति का महत्व है न समाज का। मुझे विश्वास है कि समाज के प्रति उनकी भावना अनुरूप परिवारों में आदर्श मानसिकता का प्रसार तथा विवाह सम्बंधों में सहयोग का सिलसिला सतत जारी रहेगा। मैं उनके कार्यों एवं आदर्शों की ज्योत को सतत जारी रखकर उन्हें सच्ची श्रद्धांजली अर्पित करुंगी। बहुत कम लोग संसार में होते हैं जिन्हें अपने परिवार के अलावा दूसरों की भी चिंता रहती है। आज के भाग-दौड़ भरे जीवन में इस पत्रिका के माध्यम से समाजबंधुओं में एक दूसरे के प्रति सहयोग, सहानुभूति और सहिष्णुता की भावना यदि हम जागृत कर पाते हैं तो यह हमारी सबसे बड़ी सफलता होगी। तथा हम सब पत्रिका की संस्थापक श्रीमती प्रभा शर्मा (बेन) को सच्ची श्रद्धांजली दे पाएंगे।

-संगीता शर्मा

खास बात

- ❑ सभी पाठकों/सदस्यों से निवेदन है कि वे अपनी रचनाओं के साथ स्वयं का पासपोर्ट साईज का फोटो अवश्य भेजें।
- ❑ पत्रिका का प्रकाशन प्रतिमाह 6 तारीख को कर डाक द्वारा प्रेषण किया जाता है। पत्रिका प्राप्त न होने की दशा में सीधे 0731-2450018 पर शिकायत दर्ज करावें।
- ❑ जय हाटकेश वाणी में सभी रचनाएं सदस्यों से प्राप्त होकर सम्पादित कर प्रकाशित की जाती है। बड़े आयोजनों के फोटो एवं कवरेज हेतु कृपया मोबाईल 94250-63129 पर सम्पर्क करें।

- सम्पादक

सदस्यता आवेदन पत्र

मैं.....

पूरा पता (पिनकोड सहित).....

.....

मासिक जय हाटकेश वाणी का तीन वर्ष हेतु सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित शुल्क 250/-रु. नगद/चैक/ ड्राफ्ट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते पंजाब नेशनल बैंक A/C नं. 0212002100245085 में जमा किया है।

श्रीमान संपादक महोदय

मासिक जयहाटकेश वाणी

20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार) इन्दौर

फोन. 2450018 फैक्स-2459026 मो.9425063129

Email-manibhaisharma@gmail.com
jayhotkeshvani@gmail.com

मिसाल बना जीवन...

समाज में अनेक व्यक्तित्व होते हैं जो हमें प्रेरणा प्रदान करते हैं, अच्छा जीवन जीने, आदर्श रखने तथा समाजसेवा के प्रति अलख जगाने की, किन्तु बहुत कम लोग होते हैं जो मिसाल बन जाया करते है। संभवतः इसी प्रकार की जीजिविषा लिए हमारी माताजी श्रीमती प्रभा शर्मा (बेन) विगत 42 वर्षों पूर्व इन्दौर में अपने पैतृक मकान में पति के आंशिक विरोध के बावजूद आ गई थी, उन्हें पता था कि राऊ में रहकर वे अपने उद्देश्यों को पूरा नहीं कर पाएंगी। बाबूजी स्व. शिवप्रसाद शर्मा शासकीय नौकरी में थे तथा अपने परिवार को छोड़ना नहीं चाहते थे परन्तु बेन ने उन्हें विश्वास दिलाया कि हम इन्दौर में रहकर भी अपने परिवार का पूरा ध्यान रखेंगे तथा उन्होंने यही किया भी जब तक हमारे दादा-दादी जीवित रहे उनका ध्यान रखा तथा उनके देहावसान के बाद उनके उत्तरकार्य आदि में यथासंभव सहयोग दिया। इन्दौर में भी उनको पेतृक मकान मिला जरुर परन्तु वर्षों पुराने किराएदारों का यहां कब्जा था जिन्हें बड़े संघर्ष के बाद उन्होंने हटाया। उनका सोच था कि मेरे तीनों बेटे आर्थिक अभाव के कारण पढ़ नहीं पाए हैं अतः इनके लिए कोई छोटा मोटा व्यवसाय शुरु हो, तब किराएदारों के रहते ही छोटे से कमरे में प्रिंटिंग प्रेस की शुरुआत उन्होंने करवाई। प्रारंभिक दौर से ही वे व्यवसाय में सहयोगी बनी रहीं तथा आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देती रहीं। उनका लक्ष्य था कि तमाम अभावों के बावजूद वे तथा उनका परिवार समाज के सामने मिसाल कायम करना चाहिए तथा उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति के सामने हम सब भाई-बहन भी नतमस्तक थे तथा आदरणीय बाबूजी ने भी पूरा सहयोग प्रदान किया। प्रेस के चलते-चलते ही जब हमारे नानाजी श्री गोवर्द्धनलालजी मेहता ने इन्दौर से अखबार शुरु करने का प्रस्ताव दिया तो बेन ने उस प्रस्ताव को हाथों हाथ लिया, उनका मत था कि अखबार से ज्यादा इज्जत होती है, प्रेस के साथ अखबार भी निकालो। हमारे जैसे मध्यमवर्गीय एवं अभावग्रस्त परिवार के लिए अखबार का प्रकाशन क्या आसान था? यह उनकी इच्छा शक्ति का ही परिणाम था कि हम अखबार का प्रकाशन नियमित कर पाए इस बीच कई मौके आए जब अखबार को बंद करने की नौबत आई परन्तु उन्होंने इसे बंद नहीं होने दिया। यह बात सच है कि अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता, लेकिन 'बेन' में ऐसी शक्ति थी कि उनकी बात कोई टाल नहीं सकता था। उन्होंने हमें लगातार प्रेरणा और शक्ति दी तथा काम आगे बढ़ता गया यह तो हुई अपने परिवार की आजीविका की बात परन्तु उनका लक्ष्य था कि हम दूसरों के सुख-दुख में भी काम आ सकें। परेशानियों के बावजूद वे समाज एवं रिश्तेदारों के प्रत्येक कार्यक्रमों तथा सुख-दुख में उपस्थित होने का कर्तव्य निभाती थीं तथा संभवतः पूरे परिवार को बांधे रखने के पीछे भी उनका यही लक्ष्य था कि हम किसी के काम आ पाएंगे। उन्होंने बेटों के बाद अपनी बहुओं को तथा पोते-पोतियों को भी इसी प्रकार ढाला कि वे समाज में मिसाल बन सकें। आज जब लोग बेटियों को हिकारत भरी नजरों से देखते है तथा भ्रूण हत्या जैसे पाप करते है वे देखे कि एक 'बेटी' ही मिसाल भी बन सकती है। उन्होंने न केवल अपने परिवार तथा अपने ससुराल पक्ष को गौरवान्वित किया अपितु मायके पक्ष में भी प्रारंभ से ही अपने पिता की सहयोगी बनी रही। छोटे भाई-बहनों की शादियों आदि में सहयोग के साथ ही जब-जब भी उज्जैन में उनकी जरुरत पड़ी उन्होंने अपना कर्तव्य पूरा किया। माता-पिता को तीर्थ यात्राएं कराई अपितु उनकी वृद्धावस्था में सेवा भी की। वे अपने पिता की लाडली बेटी थी, तथा उन पर उन्हें विश्वास भी था। बेन की असामयिक विदाई का सबसे ज्यादा दुख उनकी माताजी श्रीमती बसंतीबाई को ही हुआ क्योंकि वे वर्तमान में एक-दूसरे का सहारा बनी हुई थी। बेन ने विवाह के पश्चात लगातार संघर्ष किया। विवाह के बाद 8 वर्ष राऊ में रहने के बाद वे इन्दौर में आ बसी तथा अभावों के बावजूद संघर्ष करते-करते ही चिंताओं की वजह से ब्लड प्रेशर की बीमारी उन्हें हो गई थी, उनके वर्षों से चल रहे संघर्ष को बड़ा आघात उस समय लगा जब हमारे बाबूजी श्री शिवप्रसादजी शर्मा का देहावसान वर्ष 2005 में हो गया। हम परिजनों ने इस दौरान उन्हें ढांढस भी बंधाया तथा अकेलेपन का अहसास भी कम करने का प्रयास किया परन्तु वे अंदर ही अंदर टूट चुके थे। लगातार ब्लडप्रेशर की वजह से उनका हार्ट इन्लार्ज हो गया था। इसके बावजूद वे अपनी तकलीफ किसी को महसूस नहीं होने देते। गत वर्ष पैर में फ्रेक्चर होने के बावजूद वे सभी जगह कार्यक्रमों में जाते रहे तथा सबका सुख-दुख बांटते रहे। न केवल रिश्तेदार, समाजजन बल्कि उनसे जुड़े प्रत्येक व्यक्ति की उन्हें चिंता रहती थी तथा हम सभी परिवारजन उनकी इच्छापूर्ति के लिए सतत तैयार रहते थे। वे आज भले ही हमारे बीच नहीं है परन्तु उनके आदर्श एवं अच्छे कार्य करने की प्रेरणा एवं आशीर्वाद हमारे साथ है, उन्हें जारी रखकर ही हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे पाएंगे। **-दीपक शर्मा**

अजीब संयोग

*हमारे बाबूजी श्री शिवप्रसादजी शर्मा का देहावसान वर्ष 2005 में अल्प बीमारी के बाद **24 घंटे** अस्पताल में रहते हुए **1 मार्च** को हुआ तब वे **65 वर्ष** के थे। उसी प्रकार बेन श्रीमती प्रभा शर्मा भी **23 मार्च** को **24 घंटे** अस्पताल में रहने के पश्चात **65 वर्ष** की आयु में स्वर्गारोहण कर गई। बेन की जिद थी कि वे अस्पताल नहीं जाना चाहते हैं इसके बावजूद ऐसी परिस्थितियां निर्मित हुई कि उन्हें अस्पताल में दाखिल करना पड़ा।*

दुःख के साथ सात फेरे पड़ गए

सभी अपने से बड़े जब हमें आशीर्वाद देते है, तो कहते है, सदा सुखी रहो, ये उनकी प्रार्थना शुभः, ये उनके आशिष प्यारे, मगर तुम सुखी कैसे हो सकोगे? तुम्हारे तो दुःख में बहुत नियोजन है। पहला तो ये कि तुम सुख चाहते हो, इसलिये सुखी नहीं हो सकोगे। दूसरा यह कि तुम बहुत गहरे में दुःख के साथ विवाहित हो, दुःख से तुम्हारा गठबंधन हो गया है, दुःख के साथ तुम्हारे सात फेरे पड़ गये है।

मनोवैज्ञानिक कहते है कि हम प्रत्येक बच्चे को जीवन भर दुःखी रहने के लिये शिक्षा देते है और ये बात एक हद तक सही भी है। बच्चा जब दुखी होता है बीमार होता है तो माँ भी उसके पास बैठती है, पिता भी उसके पास होते है, कभी पैर दबाते है तो कभी सिर, कोई कुछ लाता है तो कोई कुछ भी खाने की जीद करता है, तब बच्चे को संवेदना मिलती है, पूर्ण सहानुभूति मिलती है। और जब वह मस्ती करता है, तोड़ा-फोड़ी करता है, चारों तरफ दौड़ता भागता है, तब उसको डांट-फटकार मिलती है। जब वह प्रफुल्लित होता है तब डाट-फटकार, सारा घर उसका दुश्मन हो जाता है। यह बात कहीं गहरे बच्चे के दिमाग में बैठ जाती है. ये फेरे पड़ने लगे। यह दुःख के साथ विवाह रचाया जाने लगा। यह शहनाई उसके मन में बजने लगी। एक बात किसी अचेतना में उतरने लगी कि दुख में लोगों की सहानुभूति होती है, सुख में लोगों की सहानुभूति नहीं होती। दुखी आदमी के प्रति लोग सद्भाव से भरे होते है। तुम्हारे घर में आग लग जाए तो सारा मोहल्ला तुमसे सहानुभूति प्रकट करेगा। और तुम एक नया मकान बना लो, तो सारे मोहल्ले में जलन और ईर्ष्या की आग फैल जाएगी। कोई तुम्हें सुखी नहीं देखना चाहता। तुम सुखी होते हो, तो लोग दुखी होते है। और इतने लोगों को दुखी करना खतरे से खाली नहीं। और तुम जब दुखी होते हो तो सारे लोग तुम्हारी प्रशंसा करते है, सहानुभूति देते है। सहानुभूति में तुम्हें भी रस आने लगता है, अच्छा लगता है, प्रीतिकर लगता है। तो दुखी होने में तुम्हारे स्वार्थ जुड़ जाते है। लोग, जिस भीड़ में तुम रहते हो-तुम्हें सुखी देखना नहीं चाहते, तुम्हें दुखी देखना चाहते है। इस भीड़ के खिलाफ तुम हिम्मत कर सकोंगे सुखी होने की? तुम राजी हो कि गालियां पड़े, तो कोई फ्रिक नहीं, सहानुभूति न मिले तो कोई फिक्र नहीं? तुम तैयार हो? तो तुम्हारे जीवन में सुख का अवतरण हो सकता है, तो हो सकते हो तुम भी सुखी।

-पवन शर्मा, इन्दौर

परिवर्तन

सदा तो धूप के हाथो में ही परचम नहीं होता।
खुशी के घर में भी बोलो, क्या कभी गम नहीं होता।
फक्त एक हादसे से, ये जमाना कम नहीं होता।
एक तारां टूटने से, फलक वीरान नहीं होता।
तूफानी लहरें, हो, अम्बर में पहरे हो
पुरवा के दामन पर, दाग बहुत गहरे हो
सागर के मांझी-2 मत तू तारना।
जीवन के क्रम में (जो) खोया उसे पाना (है)
दुर्दरम अतीत को भुलाना (है) आने वाले कल को
जो बल दे उसे लाना (है)
पलभर का अर्थ ही है-2
फिर बसन्त को आना
पत्ते सारे झड़े, सच है, फिर भी फूल तो खिलाना है-2
पतझर का अर्थ ही, फिर बसन्त का आना है-2।

संकलन- श्रीमती शारदा मण्डलोई फोन 2556266

संकट का हल

पड़ा सूखा
हुआ पानी का संकट
मांग की सरकार से
निकालो कोई हल
शासन ने युद्ध स्तर पर
उठाया तत्काल कदम
कोई प्यासा न रहे
कर दी बीयर सहज सुगम

-आशा नागर
सी-12/9, ऋषि नागर, उज्जैन
फोन 0734-2521157

।। श्री सांवरिया सेठ ।।

पंकज बुक बाईंडिंग & कम्प्युटर मोहर

हमारे यहां बुक बाईंडिंग, कम्प्यूटर मोहर, स्पायरल बाईंडिंग,
फोटोकॉपी, बिल बुक का कार्य किया जाता है।

प्रोपा. पंकज नागर – मो. 94240-65991 फेक्स 07392-245274

गोपाल कालोनी, झाबुआ

àæçQ¤ SßL¤Âæ ÒÕðÙÓ

श्रीमती प्रभा-स्व. शिवप्रसादजी शर्मा को श्रद्धापुरित श्रद्धांजलि

जन्म वर्ष- रक्षाबंधन 1944
अवसान- 23 मार्च 2009

कहते हैं नारी दो घर (कुल) को तारती/सुधारती है एक अपने माता-पिता का तथा दूसरा अपने ससुराल को। इस संदर्भ में विलक्षण व्यक्तित्व की धनी श्रीमती प्रभादेवी शर्मा का उदाहरण सदैव रखा जा सकता है। श्रीमती प्रभादेवी शर्मा ने अब से 65 वर्ष पूर्व रंथभंवर निवासी (वर्तमान उज्जैन) स्व. गेन्दालालजी मेहता के ज्येष्ठ पुत्र स्व. गोवर्धनलालजी मेहता के यहां श्रीमती बसंतीबाई की कोख से जन्म लिया था। प्रभादेवी जन्म से ही विलक्षण प्रतिभा लिये हुए थी इसीलिए इनका नाम प्रभा रखा जिसने अपनी प्रतिभा एवं प्रभा (प्रकाश किरण) से दोनों परिवारों को आलोकित किया। प्रभा बेन के माता-पिता के परिवार में अनेक उतार-चढ़ाव आए, किन्तु इन्होंने ऐसा अवसर नहीं आने दिया कि परिवार का विघटन हो। अपनी जीवित अवस्था तक प्रभादेवी ने पिता पक्ष एवं ससुराल के कुल को बांधे रखकर एक आदर्श उदाहरण समाज के समक्ष प्रस्तुत किया। जिसे कोई भी विस्मृत नहीं कर सकेगा। प्रभादेवी का विवाह राऊ निवासी स्व. गेन्दालालजी शर्मा के ज्येष्ट पुत्र स्व. शिवप्रसादजी शर्मा के साथ हुआ।

आपने अपने तीन पुत्र (दीपक, पवन, मनीष) तथा एक पुत्री (सौ. ज्योति-राजेन्द्र नागर) को पारिवारिक,सामाजिक एवं धार्मिक रीतिरिवाजों का ऐसा संस्कार दिया कि आज नागर ब्राह्मण समाज में एक अनुकरणीय उदाहरण है। बच्चों को पढ़ा-लिखाकर उनका विवाह संस्कार कराया और ऐसी बहुएं लाई जिन्होंने प्रभादेवी के परिवार को विखण्डित नहीं होने दिया। तीनों बहुओं (सौ. संगीता, सौ. दुर्गा, सौ. सीमा) ने संयुक्त परिवार में कैसे रहा जाता है का एक अनोखा उदाहरण समाज के सामने रखा। प्रभादेवी के पुत्र-पुत्री ही नहीं पौत्र-पौत्री और नाती भी इसी संस्कार से ओत-प्रोत रहे। कुल मिलाकर वे इतना अच्छा परिवार छोड़ गई है जिसका कोई सानी नहीं है।

प्रभादेवी सम्पूर्ण भारत सहित नेपाल के समस्त तीर्थ स्थानों की धार्मिक यात्राएं अपने पति स्व. शिवप्रसादजी के साथ कर चुकी थी। ये यात्राएं न

संक्षेप में 'बेन'

- सबके दुख-सुख में सहभागी।
- हिम्मतवान बनकर सबको हिम्मत बंधाना।
- समाज सुधारक के रूप में महती भूमिका।
- परिवार को संस्कारवान बना एक आदर्श परिवार का निर्माण।
- अस्वस्थ सास-ससुर एवं माता-पिता की निःस्वार्थ सेवा।
- अपने-परायों से समान व्यवहार।
- लेखनी की ताकत से समाज में जागरुकता का प्रयास।
- पुत्र-पुत्री, पौत्र-पौत्री एवं नाती सहित सम्पूर्ण समाज से स्नेह मिला।
- धार्मिक यात्राओं से पति, माता-पिता एवं अपना जीवन धन्य किया।
- यह समाज की एक अपूरणीय क्षति है।

केवल उन्होंने अपने परिवार के साथ की बल्कि अपने माता-पिता को भी इस लाभ से दूर नहीं रखा। धन्य है ऐसी पुत्री जो अपने परिवार के साथ ही अपने माता-पिता को भी तीर्थ लाभ दिलाकर अपने कर्तव्य का पालन करती रही। नागर ब्राह्मण समाज के प्रत्येक दुःख-सुख के कार्यक्रमों में प्रभा देवी की उपस्थिति कई अर्थों में महत्वपूर्ण होती थी। और जहां वे नहीं पहुंच पाती वहां उनकी अनुपस्थिति बहुत खलती थी। समाज में शामिल होकर वे नारी समाज की अनेक समस्याओं का निराकरण कर देती थी। नारी के कर्तव्यों का बोध भी समय-समय पर वे कराती रहती थी। कार्यक्रमों में उनकी उपस्थिति से एक नया वातावरण बन जाता था। वैसे यह कहने या लिखने की बात नहीं है यूं तो उन्हें जो पहचानता है उसे यह सब मालूम है। प्रभा देवी अपने एवं परायों के बीच कोई भेदभाव नहीं रखती थी। वे सदैव हंसते मुस्कुराते हुए अपने प्यार-दुलार एवं मधुर व्यवहार से सभी को प्रसन्न रखती थी। वास्तव में प्रभादेवी जैसी महिला लाखों में एक ही होती है। जिन्होंने अपने अनुभवों का लाभ समाज ही नहीं कई परिचित-अपरिचित लोगों को दिया जिसे कोई भूल नहीं सकेगा। प्रभादेवी को परिवार सहित सभी परिचित लोग 'बेन' के नाम से पुकारते थे। इस प्रकार वह सभी की 'बेन' थी। जिनकी कमी हम सभी को खल रही है। प्रभा देवी ने समाज सुधार का भी बीड़ा उठाया। उनके मन में दो-ढाई वर्ष पूर्व ऐसा विचार आया कि समाज में जागृति लाने हेतु कुछ किया जाये। और उनके मन में जो बीजारोपण हुआ था वह 'जय हाटकेशवाणी' के रूप में अंकुरित हुआ। और आज यह पत्रिका न केवल मालवा अंचल अपितु संपूर्ण मध्यप्रदेश, भारत तथा विदेशों में भी वटवृक्ष के रूप में फैल गई है। प्रभादेवी ने इस पत्रिका के प्रचार-प्रसार के लिये मालवा सहित सम्पूर्ण प्रदेश के एक-एक घर में स्वयं जाकर नागर समाज के लोगों से सम्पर्क कर उन्हें इस पत्रिका का सदस्य बनाया। इस पत्रिका में आपने संरक्षकों, सम्पादन एवं संवाददाता के लिये समाज के छः घटकों की विद्वान महिलाओं एवं भाईयों को सम्मिलित किया जिससे यह नहीं महसूस होता कि यह 'वाणी' नागर समाज के किसी विशेष घटक से ही सम्बंधित है। उन्होंने संकुचित विचारों को छोड़ पत्रिका प्रकाशन में व्यापक दृष्टिकोण रखा। इसीलिये आज इस पत्रिका के तीन हजार से अधिक सदस्य है और प्रतिमाह सदस्य संख्या में वृद्धि बरकरार है। यह पत्रिका अब नागर समाज में बहुत लोकप्रिय हो गई है। जिसमें समाज के हर पहलुओं, समस्याओं, खबरों, कार्यक्रमों, प्रतिभाओं का एवं समाज के दिग्गजों का परिचय, जन्मतिथि-पुण्यतिथि एवं विवाह योग्य युवक-युवतियों का ब्यौरा निःशुल्क एवं बिना भेदभाव के प्रकाशन होता है। इसीलिए यह पत्रिका नागर समाज की 'वाणी' के रूप में उभरी है। मैं नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर मंदिर न्यास की तरफ से हम सबकी बेन को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। ईश्वर उन्हें स्वर्ग में उच्च स्थान प्रदान करें यही हमारी प्रार्थना है।

अपने दोनों पोतों के साथ बेन।

डॉ. रामरतन शर्मा
सचिव
नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर मंदिर (धर्मशाला)
न्यास, हरसिद्धी दरवाजा, उज्जैन
निवास-63, रविन्द्र नगर, उज्जैन फोन 0734-2516603

।। श्री हाटकेश्वराय नमः ।।

नागर प्रिन्टर्स एवं स्टेशनरी सप्लायर्स
नागर बुक बाइन्डर्स

कम्प्यूटराईज्ड मोहर एवं सभी प्रकार की बाईंडिंग हेतु
जिला प्रशासन झाबुआ द्वारा अधिकृत

राजवाड़ा चौक, पानी की टंकी के सामने, झाबुआ

प्रोपा. श्रीमती लीना नागर
मो. 94251-02276
94240-64104

जोशीजी की हिम्मत की दाद

''जय हाटकेश वाणी'' के पिछले अंक में प्रकाशित श्री रामचन्द्रजी जोशी का लेख-

मृत्युभोज,पिण्डदान और मृत्यु के पश्चात उत्तरकर्म की प्रथाओं पर कड़ा प्रहार है। लेखक के हिम्मत की दाद देना पड़ेगी। जिसने वर्षों से चली आ रही कुप्रथाओं को नीडर और निर्भीकता से व्यक्त किया है। नई पीढ़ी को इस प्रकार के लेख से प्रेरणा लेना चाहिये। समाज के प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि इन प्रथाओं में सुधार और संशोधन हेतु भी प्रयास करें। बढ़ती महंगाई समय की कमी और युग की पुकार आगे चलकर इस लेख में वर्णित बातों पर अवश्य रंग लावेगी। अभी भी समाज के और अपने ही परिवार के रिश्तेदार राय देने वाले रायचन्द जिन्हें राय साहब की उपमा से सुशोभित किया जा सकता है। वे भी पुराने जमाने से चली आ रही कुप्रथाओं का नये जमाने में रहते हुए भी किसी भी पारिवारिक कार्यक्रम मुण्डन, यज्ञोपवित, शादी-ब्याह, सगाई, मृत्युभोज में संशोधन और सुधार की संक्षिप्त रूपरेखा बताने के बजाय लम्बी चौड़ी सामाजिक भरी प्रथाओं को गहरे समुद्र में डालना पसन्द करते है। जिसके कारण बहुत से कार्य कर्ज लेकर न चाहते हुये भी पारिवारिक और रिश्तेदारी के बंधन में बंधकर करना पड़ते है। समाज में प्रथाओं के सुधार हेतु मीटिंग और समाज सुधारकों द्वारा समय-समय पर प्रयास किये गए है जो कि सैद्धान्तिक ज्यादा और व्यावहारिक कम है। श्री जोशीजी द्वारा कुप्रथाओं में सैद्धान्तिक सुधार की अपेक्षा व्यावसायिक सुधार अपेक्षित है। तभी आने वाली पीढ़ी कर्ज के भार से व्यस्ततम कार्य भरे बोझ से, और पुराने रिवाजों की, परम्परा के टेंशन से मुक्त हो सकेगी।

प्रेषक- हरिशचन्द्र शर्मा
3/2, प्रभु कृपा, सुदामा नगर, उज्जैन

उज्जैन में आयुर्वेद चिकित्सा के क्षेत्र में नागर समाज के व्यक्तियों को निम्न प्रकार से सम्मान प्राप्त हुआ।

1. दिनांक 1 व 2 नवम्बर 2008 को उज्जैन के प्रेम छाया परिसर में मध्यप्रदेश आयुर्वेद सम्मेलन का एकादश महाअधिवेशन 2008 सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में आयुर्वेद सम्मेलन द्वारा डॉ. विजयशंकर त्रिवेदी उज्जैन को आयुर्वेद चूड़ामणि डॉ. बालकृष्ण व्यास उज्जैन एवं डॉ. विजयकृष्ण व्यास मक्सी (शाजापुर) को आयुर्वेद भूषण की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया।

2. मध्यप्रदेश आयुर्वेद सम्मेलन की नव गठित कार्यकारिणी एवं कार्य समिति में डॉ. विजय शंकर त्रिवेदी को 'वरिष्ठ मार्गदर्शक' डॉ. बालकृष्ण व्यास को कार्यलयीन मंत्री एवं डॉ. विजय कृष्ण व्यास को जनसंपर्क एवं संगठन समिति का सदस्य मनोनीत किया गया है।

3. उज्जैन में 2008 में आयोजित कार्तिक मेले में जनपद स्वास्थ्य सम्मेलन के अवसर पर आयोजित निःशुल्क चिकित्सा शिविर में नगरनिगम उज्जैन एवं अवन्तिका देशी चिकित्सा मण्डल द्वारा डॉ. बालकृष्ण व्यास को आयुर्वेद के विकास कार्यों में अग्रणी आयुर्वेद के विशिष्ट ज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिये सम्मानित कर प्रशंसा प्रमाण पत्र दिया गया। ज्ञातव्य है कि डॉ. बालकृष्ण व्यास को पूर्व में 2006 में भी मेले के अवसर पर यही सम्मान प्राप्त हो चुका है।

4. डॉ. बालकृष्ण व्यास को श्री धन्वन्तरी आयुर्वेद चिकित्सा महाविद्यालय एवं आयुर्वेद शोध केन्द्र व्यास उज्जयिनी का न्यासी मनोनीत किया गया है। डॉ. विजय शंकरजी त्रिवेदी इस न्यास के अध्यक्ष है।

प्रस्तुति-कृष्णकान्त शुक्ल
उज्जैन

अल्प बचत योजनाए यानी शुद्ध फायदा

अपनी गाढ़ी मेहनत की कमाई को वहां लगाए जहां वह सुरक्षित हो, और दे सबसे ज्यादा फायदा

आयकर में छूट, आपकी रकम सुरक्षित, अधिक ब्याज

योजनाए- (१) राष्ट्रीय बचत पत्र N.S.C. (२) किसान विकास पत्र (३) मासिक आय योजना ८ प्रतिशत ब्याज (४) सावधि जमा (५) वरिष्ठ नागरिक ५ वर्षीय खाता ९ प्रतिशत ब्याज

अधिकृत एजेन्ट- कृष्णकान्त शुक्ल
सी-५९ अभिलाषा कालोनी, देवास रोड,
उज्जैन फोन २५११८८५

''साक्षात्कार, प्रत्यक्ष सत्य से'' - परिणाम

'ऊपर वाले को' किसी भी धर्म में आज तक देखा नहीं गया। फिर भी धार्मिक अवतारों द्वारा दिये गये उपदेश, गीता, कुरान, बाईबिल, गुरु ग्रन्थ साहिब आदि में समाहित है। इन्हीं उपदेशों के माध्यम से मनुष्य को सन्मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित किया जाता रहा है। उसी प्रकार जीवात्मा को किसी ने नहीं देखा। फिर भी चौरासी लाख योनियों में से गुजरने वाली बात पुराणों में अंकित है। जो वास्तविक और वैज्ञानिक धरातल पर गले नहीं उतरती। क्योंकि बीज का संकरण तो किया जा सकता है। किन्तु योनि परिवर्तन संभव नहीं लगता।

भूत-प्रेत, यमराज आदि को भी किसी ने नहीं देखा, फिर भी इन काल्पनिक बातों पर विश्वास करने वाले उपलब्ध हैं, जो ना समझ लोगों को डराने-धमकाने में इनका उपयोग करते हैं।

अब बात आती है साक्षात्कार, प्रत्यक्ष सत्य से लेख के परिणाम की। दस प्रश्नों के अन्त में अंकित था कि क्या आपके उत्तर अन्य उत्तरों से मेल खाते हैं? परीक्षण करें। किन्तु किसी भी उत्तरदाता ने इस बिन्दु पर ध्यान नहीं दिया, परिणाम स्वरूप दिये गये उत्तर एक दूसरे के विरोधाभासी बन गये। दिये गये लेख को भी नजरअन्दाज कर उत्तर दिये, जिसके अपेक्षित उत्तर प्राप्त नहीं हुए। कुछ पाठकों ने जीव बीज को दिखने की बात लिखी है किन्तु उन्होंने यह ध्यान नहीं दिया कि वह स्थिति अंकुरण के बाद की है।

एक प्रश्न में प्राणी का उद्देश्य क्या है? पूछा गया है। प्राणी शब्द एक तात्पर्य प्राणी मात्र से है किन्तु उसका संबंध केवल मनुष्य से जोड़ कर उत्तर दिया गया। प्राणी का उद्देश्य है सृष्टि का निरन्तर विस्तार और उसका परिचालन।

कहीं-कहीं प्रश्न को झुठलाने का प्रयास किया गया। फिर भी निम्नांकित उत्तरदाताओं का प्रयास सराहनीय रहा-

1. श्री सुरेन्द्र शर्मा, देवास, 2. श्रीमती रुद्रकान्ता रावल, इन्दौर, 3. डॉ. इन्दुबाला व्यास, उज्जैन, 4. श्री सौरभ नागर, उज्जैन, 5. डॉ. नरेन्द्र नागर, उज्जैन, 6. श्रीमती रचना विजय नागर, वेरावल (सौराष्ट्र), 7. श्रीमती सुमन त्रिवेदी, उज्जैन, 8. श्रीमती रेखा जोशी, उज्जैन, 9. श्रीमती मंजुला हरिधर याज्ञिक, कलकत्ता, 10. श्री सूर्य प्रकाश बालकृष्णाजी मेहता, शाजापुर।

भविष्य में भी इसी प्रकार चिन्तन चलता रहे इसी कामना के साथ, सभी पाठकों एवं जय हाटकेश्वर वाणी हाटकेश्वर समाचार को धन्यवाद।

रामचन्द्र जोशी
122-बी, सतराम सिंधी कालोनी, सांवेररोड, उज्जैन,
फोन 0734-2513675

क्योंकि हम 'कवि' है

कल्पना की उड़ाने भरने वाले हम,
अपने मन की करने वाले।
किसी सरहद में न बंधकर रहने वाले हम,
सात समन्दर पार जाने वाले।
राह में गर कर दे कोई अंधेरा,
हम कलम से दीपक जलाने वाले।
पर्वतों पे नदियों को चढ़ा दें,
धरती को आसमां पे व
आसमां को धरती पे ला दें।
फूल भरी राहों पे कांटे,
व कांटों भरी राहों पे फूल बिछा दें।
सारी दुनिया बंधी है हमारी कलम से,
जिसको जैसा चाहें वैसा बना दें।
रेगिस्तान में बाग लगा दें,
और पानी में आग लगा दें।
हम चाहें तो आसमां पे झूला बांध,
धरती को उसमें बिठाकर झूला दें।
हमें पहचानों। हम कवि है,
किसी में दम हो तो हमारा
कलम रूपी पैर हिला दें।

पं. दिनेश नागर
116, खजराना, इन्दौर
मो. 94250-76819

म.प्र. में ''मॉडल केमिस्ट'' से सम्मानित

Megha Shree MEDICOES

D.L.No.: 20-21/126
GOVT. APPROVED MEDICAL SHOP

(CHEMIST & DRUGIST)

Air Condition Medical Shop

Opp.Govt.Ayurvedic Hospital, 38, Station Road, RAU-453 331, Phone:5055227

नागर परिवार के चांचौड़ा में 150 वर्ष

चांचौड़ा निवासी स्वर्गीय बसन्तीलाल नागर की 15वीं पुण्य तिथी पर चांचौड़ा नागर परिवार एक स्मारिका प्रकाशित करने जा रहा है। इस स्मारिका में 150 वर्ष पूर्व से वर्तमान तक परिवार के लगभग 800 सदस्यों की वंश सूची को संकलित कर प्रकाशित किया जाना है। इन डेढ़ सौ वर्ष की अवधि में मालवा, प्रदेश एवं देश के कई नागर बन्धुओं ने चाचौड़ा नागर परिवार से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े रहकर चाचौड़ा में समय समय पर आयोजित पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लिया। वर्तमान में भी कई नागर बन्धु चाचौड़ा से जुड़े रहकर कई आत्मीय स्मृतियां संजोये हुये है।

स्मारिका उपयोगी एवं रूचिकर हो, इसलिये संबंधित नागर बन्धुओं से अनुरोध है, कि कृपया चाचौड़ा से संबंधित स्मृति लेख, विचार, अनुभव, फोटो इत्यादि जून माह तक निम्न पते पर भेजने का कष्ट करें।

-डॉ. महेन्द्र नागर
52, क्लासिक पूर्णिमा इस्टेट, खजराना रोड, इन्दौर-16
फोन 0731-2560394, मो. 094253-78353

नीतिन नागर की पदोन्नति

इन्दौर। नीतिन नागर सुपुत्र स्व. शिवेश नागर की पदोन्नति अधिकारी वर्ग में हो चुकी है। वे स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर की सियागंज शाखा में कार्यरत हैं। आप स्व. दुर्गाशंकरजी नागर उज्जैन के सुपौत्र एवं एच.एस. दवे (सुमन भाई दवे के नाती है। आप इन्दौर में नागर समाज कार्य में रुचि रखते है व सक्रिय कार्यकर्ता है। दवे परिवार इन्दौर व समस्त नागर समाज की और से हार्दिक बधाई।

-कृष्णकांत शुक्ल, उज्जैन

चन्द दो पाइया

फेवरेट डिश सा हो जाए, फिर मानव जीवन

गेप-बढ़ा गड़बड़ बढ़ी है बदला संसार।
बहुत कष्ट अब दे रहें, सनम, सखा, सरकार।।

मुद्रा प्रसार विकराल पावर सन्मुख जन हताश।
इससे गड़बड़ वे ही सुखी नेता, बाबू, बदमाश।।

आयटम गर्ल में अल्पवस्त्र से लगते सुख के क्षण।
दुख के लम्हें एसे लगे ज्यो, महाराष्ट्रीय साड़ी श्रीमन् ।।

दुश्मनों में देखे हम यदि, दोस्तों के सद्‌गुण।
फेवरेट डिश सा हो जाए, फिर मानव जीवन।।

टेन्शन आयु दोनों बढ़े-बढ़े कपट व्यवहार।
सौदे-बाजी आए दिन चले, दुनिया मछली बाजार।।

धन धरती का वितरण बढ़ा रहे अवसाद।
इनके कारण मस्ता रहे मंदी आतकंवाद।।

सर्फ धुले कपड़ों से हुए उजले-उजले आदर्श।
मुट्ठी भर जन दिखते सुखी है यह कैसा हर्ष ? ।।

रैली जाम घेराव 'औ' आगजनी पथराव।
बगुला पंखी हो गए, वादें 'औ' ठहराव।।।

'भ' भ्रष्टाचार है, 'भ' से होता भाषण।
अपने भारत वर्ष में नहीं इनपे राशन।।

हंसी, लुप्त हो रही है गायब मुस्कान।
कहकहे आर्टिफिशियल हुए, सच कहत श्रीमान।।

नहीं पेट को अन्न है नहीं हाथ को काम।
भरी दुपहर में आरती अनचाही सी शाम।।

अभिमन्यु त्रिवेदी गड़बड़ नागर
78/2, वररुचि मार्ग एके बिल्डिंग चौराहा, उज्जैन
फोन 0734-2510992, 2518483

।। जय हाटकेश ।। ।। श्री गणेशाय नमः ।। ।। श्रीनाथ कृपा ।।

मेसर्स श्री जी आटोमोबाईल्स

डीलर शीप- एक्साईड एस.एफ. बेटरी (अलीराजपुर व झाबुआ जिला)

इन्वर्टर, युपीएस, बैटरी उपलब्ध है।

प्रोपा. परेश नागर – मो. 94240-19690

माधव कुंज, थांदला रोड़, पेटलावद

संस्थापक-
स्व.श्रीमती प्रभा शिवप्रसादजी शर्मा
संरक्षक-
श्रीमती निर्मला कमलकिशोरजी नागर
सेमली आश्रम
श्रीमती प्रतिभा आलोकजी मेहता
नई दिल्ली
श्रीमती विशाखा मौलेशजी पोट्टा
मुम्बई (महा.)
श्रीमती नलिनी रजनी भाई मेहता
अहमदाबाद (गुज.)
श्रीमती शारदा विनोदजी मण्डलोई
इन्दौर (म.प्र.)
श्रीमती आशा ओमप्रकाशजी मेहता
भोपाल (म.प्र.)
श्रीमती उषा रमेशजी दवे
इन्दौर (म.प्र.)
श्रीमती अंजना सुरेन्द्रजी मेहता
शाजापुर (म.प्र.)
श्रीमती सुषमा सुभाषजी व्यास
भोपाल (म.प्र.)
श्रीमती प्रमिला आशिषजी त्रिवेदी
इन्दौर (म.प्र.)
श्रीमती प्रमिला ओमप्रकाशजी त्रिवेदी
रतलाम (म.प्र.)
श्रीमती शीला जगदीशजी दशोरा
इन्दौर (म.प्र.)
श्रीमती रमा सुरेन्द्रजी मेहता
उज्जैन (म.प्र.)

❐ प्रदेश संवाददाता ❐
उज्जैन- मो.9301137378
सौ. अनामिका मनीष मेहता
खण्डवा-मो.98267-74742
सौ.शोभना सरोज जोशी
खरगोन-मो.98936-18231
सौ.वर्षा आशीष नागर,
रतलाम-मो.94251-03628
सौ.हर्षा गिरीश भट्ट
नीमच-मो.94240-33419
सौ.सावित्री रमेश नागर
नागदा-मो.98270-85738
सौ.शैलबाला विजयप्रकाश मेहता
खड़ावदा-मो. 98267-32441
सौ.नैना ओमप्रकाश नागर
पचौर-मो.94244-65799
सौ.संध्या शैलेन्द्र नागर
रीवां-मो.-94258-74798
सौ.मालिनी किशन पण्डया
राऊ-फोन-0731-6538275
सौ.माया गिरजाशंकर नागर
माकड़ोन-फोन-07369-261391
सौ.सुनीता महेन्द्र शर्मा
पीपलरावां-फोन-07270-277722
सौ.शकुंतला हरिनारायण नागर
देवास-मो.98273-98235
सौ.सरिता मोहन शर्मा
सागर- मो. 98270-88588
श्रीमती अलका प्रमोद नागर
झाबुआ- मो. 9424064104
सौ. लीना-राजेश नागर

प्रधान सम्पादक-
सौ. संगीता दीपक शर्मा
सम्पादक-
सौ. दिव्या अमिताभ मण्डलोई
सौ. दमिता नवीन झा
सह सम्पादक-
सौ. रुचि उमेश झा
सौ. संगीता विनोद नागर
सौ. सुनिता धर्मेन्द्र भट्ट
सौ. अरुणा बृजकिशोर मेहता
सौ. सरोज पं. कैलाश नागर
सौ. नीलम राजेन्द्र शर्मा
सौ. नीता वाल्मिकी नागर
सौ. जया सुभाष नागर
सौ. पल्लवी जय व्यास
सौ. तृप्ति निलेश नागर
सौ. ममता मुकुल मण्डलोई
सौ. ज्योति राजेन्द्र नागर
सौ. वन्दना विनीत नागर
सौ. आशा योगेश शर्मा
सौ. संगीता प्रदीप जोशी
सौ. बिन्दू प्रदीप मेहता
सौ. पूजा अमित व्यास

20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार) इन्दौर फोन. 0731-2450018 फैक्स-0731-2459026 मो.94250-63129, 98260-95995, 94259-02495, 98260-46043, 93032-74678, 99262-85002, 93032-29908
Email-manibhaisharma@gmail.com, jayhotkeshvani@gmail.com

पुत्र की स्मृति में मंदिर निर्माण कराया

अकलेरा। **धार्मिक और सामाजिक विचारों से ओत-प्रोत समाजसेवी** श्री महावीर प्रसाद चतुर्वेदी सेवानिवृत व्याख्याता द्वारा अकलेरा में परम पावन धाम हनुमान मंदिर परिसर में ईश्वरीय प्रेरणा प्राप्त कर अपने प्रिय पुत्र स्व. प्रकाश चतुर्वेदी की स्मृति में श्री 'राधाकृष्ण मंदिर' का निर्माण कराया गया। आपने मंदिर की मूर्तिया 5 क्विंटल की वजनी 5 फीट लम्बी 70,000/- में संगमरमर की बनी हुई मंदिर में स्थापित कराई गयी। मंदिर में मूर्ति स्थापना (प्राण प्रतिष्ठा) दिनांक 14-2-08 को पं. श्री पुरुषोत्तम नागर 'शास्त्री' नलखेड़ा द्वारा करायी गई। इस अवसर पर श्रीमद् भागवत सप्ताह का आयोजन भी रखा गया। श्री 'राधाकृष्ण मंदिर' निर्माण में करीब 2,50,000/- की लागत आई। आपके परिवार में मात्र तीन पुत्रिया है तथा तीनों का विवाह हो गया है। आपका ससुराल ग्राम लोजेन (नलखेड़ा) में है। आप दोनों स्त्री-पुरुष धार्मिक विचारों के है। आप सेवा निवृत्ति उपरांत चारों धाम की यात्रा कर चुके है। ज्योतिष विद्या में भी आपकी काफी रुचि है। समाज सेवा व धार्मिक आयोजनों में आपकी भूमिका अहम है। नागर समाज एवं सर्व ब्राह्मण समाज को ऐसी प्रतिभा पर नाज है।

-कुलेन्द्र नागर अकलेरा (राज.)

१०६ वर्षीय पं. रतनलाल नागर 'भट्ट'

अकलेरा। राजस्थान के झालावाड़ जिले के तहसील अकलेरा के चुरैलिया ग्राम में 107 वर्षीय पं. जी रतन लालजी नागर 'भट्ट' मौजूद है। जो उम्र के इस पड़ाव पर आज भी नित्य कर्म स्वयं कर रहे है। सरल स्वभाव मृदुभाषी, परमस्नेही व्यक्तित्व के धनी परम श्रद्धेय पं. श्री रतनलालजी का नाम समाज में बड़े आदर के साथ लिया जाता है। आपका जन्म सम्वत 1958 में म.प्र. के राजगढ़ जिले के झाड़मऊ ग्राम में हुआ है। आपके पिता का नाम स्व. श्री गोपीलाल एवं माता का नाम स्व. निर्मला नर्बदाबाई था। आपके बड़े भाई स्व. पण्डित मदनलाल नागर जो जीरापुर रहते थे उनका स्वर्गवास भी 104 साल की आयु में हुआ। आपका विवाह 20 वर्ष की आयु में ग्राम छजबाड़ी निवासी पं. अमृत लालजी नागर की सुपुत्री श्रीमती केसर बाई के साथ हुआ था। आप विवाह के तीन वर्ष बाद पं. मदनलालजी नागर चुरैलिया के यहां दत्तक पुत्र के रूप में आकर रहने लगे। आपकी पत्नी का देहान्त हुए 65 साल हो चुके है। उस समय आपकी आयु 42 साल थी। तथा आपकी एक सन्तान का जन्म हुआ आपका पुत्र श्री गोरधनलाल नागर है जो पुलिस विभाग की सर्विस में थे एवं रिटायर्ड हो चुके है। आपके पुत्र की आयु वर्तमान में 66 साल है। आपके दो पोत्र बद्रीश आयु 36 व श्याम आयु 32 साल है। आप इस उम्र में भी नित्य सेवा पूजा पाठ वर्ग तन्मयता से कर रहे है। परिवार के सभी पुत्र-पोत्र एवं बहुएंआपकी सेवा बड़े आदर रख निभा रहे है। इसी कारण आपको उम्र का यह पड़ाव 107 वर्ष की आयु में भी बड़ा सुखद अनुभूत महसूस हो रहा है। राजस्थान नागर ब्राह्मण परिषद अकलेरा आपके दीर्घायु एवं स्वस्थ बने रहने की कामना करती है।

-श्रीमती गायत्री कुलेन्द्र नागर
अकलेरा

विट्ठलभाई नागर
विनोद नागर
वरूण नागर

।। जय हाटकेश ।।

पार्वती परिधान

शुटिंग, शर्टिंग, तैयार फेन्सी वस्त्र,
साड़ियां, यूनिफार्म एवं होजयरी के विक्रेता

अहिल्या मार्ग, शंकर मंदिर के सामने, पेटलावद

मो. 99260-41134
मो. 94254-87224
मो. 99077-86212

जन्मदिन पर बधाई

कु. अंशिका नागर
(सुपुत्री- विपीन-ज्योति नागर)
दिनांक 18 अप्रैल 2007
सरदार पटेल मार्ग, थान्दला जि. झाबुआ

◆

चि. अभिषेक नागर
(सुपुत्र-प्रमिला-नवीन नागर)
जन्मदिनांक 18 मार्च 2002
पता-विज्ञान नगर, रणथम्भौर रोड, सवाई माधोपुर (राजस्थान)

3 सितारे और स्वर्णपदक

कुमारी नमामि जोशी सुपुत्री आशुतोष जोशी नेशनल हेड 'बी' एअरटेल नई दिल्ली (विद्यार्थीनी द इमराल्ड हाईटस इन्टरनेशनल स्कूल इन्दौर) ने वार्षिक विद्याध्यन 2008-09 में 'उत्कृष्ट' निरुपित तीन सितारे अर्जित कर उच्च स्थान पाया। कक्षा 3री उत्तीर्ण कर अगली कक्षा 4थी में 26-3-09 से अध्ययन का शुभारंभ किया। इस उपलब्धि के अतिरिक्त स्कूल के खेल-जगत के अन्तर्गत 'जूडो कराटे' जूनियर खेल प्रतियोगिता में विजयी 'स्वर्ण पदक' से भी विभूषित की गई। नागर समाज की इस प्रतिभा को हर्षोल्लास के साथ हार्दिक बधाई। 25 मार्च 2009 को बालिका को अपने 9वें जन्मदिन पर भी सफलता व चिरायु होने की शुभकामनाएं व बधाई।

-पुरुषोत्तम जोशी

उदयपुर। नागर समाज के समागम मिलन के समक्ष चि. प्रिन्शू सुपुत्र-श्रीमती मोनिका-सत्येन्द्र नागर का पारिवारिक देवस्थान श्रीनाथजी (लाडूलालजी) के सम्मूख मुंडन संस्कार सम्पन्न हुआ। बधाई

59वीं वर्षगांठ की बधाई

आदरणीय सौ. बाई (श्रीमती सावित्री देवी मेहता) एवं बाबुजी (श्री शशिकांत मेहता) को उनके विवाह की 59वीं वर्षगांठ पर प्रदीप-बिंदू मौसम एवं तिथि मेहता की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं एवं चरण स्पर्श। (रतलाम)

विवाह की पचासवीं वर्षगांठ

भगवान गोपालकृष्ण की असीम अनुकम्पा से नागर ब्राह्मण समाज पीपलरावां के अध्यक्ष श्री हरिनारायणजी नागर एवं श्रीमती शकुन्तलादेवी नागर के विवाह की स्वर्ण जयंति (50वीं) के अवसर पर श्रीमती मनोरमा देवी नागर एवं नागर परिवार पीपलरावां की ओर से को कोटिशः शुभकामनाएं।

84 प्रतिशत अंको से उत्तीर्ण

चि. गौरव रावल सुपुत्र डॉ. हेमन्त रावल, सूरज नगर, उज्जैन वर्तमान में बी.फार्मा अन्तिम से विक्रम वि.वि. उज्जैन से 84 प्रतिशत अंको से उत्तीर्ण हुए। आपका चयन टेरेटरी ट्रे मेनेजर पद पर विश्व प्रसिद्ध फार्मा. कम्पनी 'इली-लिली' में केम्पस चयन में हुआ। आप जून में प्रशिक्षण हेतु बैंगलूर रवाना होंगे। **दूरभाष-0734-2561879**

सफल 25 वर्ष पूर्ण

वैवाहिक जीवन के सफल 25 वर्ष पूर्ण होने पर पं. श्री उमाशंकर नागर एवं श्रीमती चारुमित्रा नागर को हार्दिक बधाईयां

दिनांक 22 अप्रैल

शुभकामनाएं-पं. नन्दकिशोर नागर (पिताजी श्रीमती मनोरमादेवी श्रीमती शकुन्तला नागर, हरिनारायण नागर (पीपलरावां) श्रीमती गीतादेवी-मुरलीधर नागर (भैया-भाभी) श्रीमती मधुलिका-विकास रावल, श्रीमती सुनीता-मनमोहन नागर, श्रीमती मनीषा-मुकेश शर्मा, श्रीमती बिन्दु-प्रदीप मेहता, श्रीमती प्रेरणा-विजय नागर दुष्यन्तकुमार-सुमित्रादेवी, रमेशचन्द्र-राजेश्वरी देवी, ललितकुमार-ज्योतिदेवी, भुपेन्द्रजी-रश्मिदेवी, प्रकाशजी-सुनीता, रीतेश, विक्की, हिमांशु, अवि।

शुभकामनाओं सहित

शर्मा ब्रदर्स

ब्रोकर, कॉटन सीड, केक एंड आईल

4/2, मुराई मोहल्ला, श्री निकेतन, शॉप नं. 1 छावनी, इन्दौर
फोन 2706115, 2707115, मो. 94240-09615, 9826088115, 9826081115, 9926088115, 9009562115

वैवाहिक (युवक)

1. पुष्पेन्द्र डी.के. नागर
जन्मदिनांक 26-2-1971
शिक्षा- बी.कॉम.
कार्यरत- सरकारी कंपनी में
सम्पर्क- 16/2124, नागरपाड़ा गणगौरी बाजार, जयपुर (राज.)
फोन 09829458301, 0992848680

2. सत्यम् कपिलकांत नागर
जन्मदिनांक 24 मार्च 1981
(4.50 प्रातःकाल) रायपुर
सम्पर्क- 603, रॉयल टावर, पंचपेढ़ी नाका, धमतरी रोड रायपुर
फोन 2419204-5, 09300588899

3. अमित कैलाशचन्द्र नागर
जन्मदिनांक 26-2-1982
शिक्षा- बी.एस.सी., एम.बी.ए.
कार्यरत- एच.डी.एफ.सी.बैंक
सम्पर्क- कैलाशचन्द्र नागर, 27-ए, रतनबाग एरोड्रम रोड, इन्दौर
मो. 98273-40231

4. प्रवीण जगदीश नागर
जन्मदिनांक 24-12-1975
शिक्षा- दसवी
कार्यरत- प्रायवेट कंपनी में
सम्पर्क- सांवरिया मंदिर के पास, मयूर नगर मुसाखेड़ी, इन्दौर
फोन 0731-2401752, 9926514790

5. पियुष वीरेन्द्रलाल नागर
जन्मदिनांक 8-7-1973
शिक्षा- बी.कॉम. ऑमर्स
कार्यरत- प्रायवेट कंपनी में
सम्पर्क-1613, पन्नालाल वैशाख, लेन लिलुआ जि. हावड़ा
फोन 033-26454526

वैवाहिक (युवती)

1. अंकिता स्व. श्री जितेन्द्रकुमार नागर
जन्मदिनांक 15 मार्च 1987
शिक्षा- बी.कॉम., एम.कॉम. अध्ययनरत
सम्पर्क- 25, मणगार घाट, उदयपुर
फोन 0294-2560099

2. यामिनी कैलाशचन्द्र नागर
जन्मदिनांक 21-12-1985
शिक्षा- बी.एस.सी. (बायो) एम.एस. डब्ल्यू
सम्पर्क- कैलाशचन्द्र नागर
27-ए, रतनबाग, एरोड्रम रोड, इन्दौर
मो. 98273-40231

3. श्रुति आर.एन. पंड्या
उम्र- 28 वर्ष
शिक्षा- एम.एस.सी. माईक्रोबायोलॉजी
सम्पर्क- 50-सी, जेड, गोविन्दपुर, इलाहबाद (उ.प्र.)

4. मेघा दिनेश जोशी
जन्म दिनांक 22 अगस्त 1980
शिक्षा- बी.पी.टी. (फिजियोथेरेपिस्ट)
एम.बी.ए. (हास्पी.एड.)
सम्पर्क- 0731-2491007

5. कु. निधि अभयचंद मेहता
जन्मतिथि- 5-11-1980 (शाम 7.30 अजमेर)
शिक्षा - एम.एस.सी. (माईक्रोबायोलॉजी), एम.बी.ए. (एचआर)
सम्पर्क- बी-56, कालानी बाग, देवास
फोन (07272) 250446, मो. 9425048746

6. कु. पायल अशोक पंचोली
जन्मतिथि- 18-1-1982
शिक्षा- बी.कॉम. (फैशन डिजाईनिंग में डिप्लोमा एवं पेन्टिंग)

7. कु. पूजा अशोक पंचोली
जन्मतिथि- 29-5-1983
शिक्षा- एम.कॉम. (पेन्टिंग व कम्प्यूटर मे दक्ष)
सम्पर्क- 0731-2559011, मो. 98264-10209

।। श्री हाटकेश्वराय नमः ।।
डॉ. राहुल नागर
BHMS,CCH (Mub.)
फोन 07392-285222
मो. 9424063857
संजीविनी क्लिनीक
298, राधाकृष्ण मार्ग पिटोल जिला झाबुआ

इन्दौर नागर समाज ने मनाया फाग उत्सव

इन्दौर। अ.भा. नागर परिषद शाखा इन्दौर के सदस्यों ने फाग उत्सव मनाया। इसमें सभी समाजजनों ने जल बचाने का संकल्प लिया। इसमें तय किया गया कि जल संकट के चलते समाज के सभी सदस्य पानी का अपव्यय रोकेंगे, व्यक्तिगत समारोह, शादी-ब्याह एवं अन्य पार्टियों में पानी की फिजुल खर्ची रोकेंगे। संस्था द्वारा सम्पन्न होली मिलन के दौरान अध्यक्ष पं. रमेश रावल एवं सचिव नीलेश नागर ने बताया कि आगामी 8 अप्रैल को समाज के इष्टदेव भगवान हाटकेश्वर का पाटोत्सव धूमधाम से मनाया जावेगा। फाग उत्सव में सांस्कृतिक संयोजक आशीष त्रिवेदी, व्रजेन्द्र नागर, पं. अशोक भट्ट, दीपक शर्मा, विश्वनाथ व्यास, मनोज मेहता, नवीन नागर, केदार रावल सहित बड़ी संख्या में समाजबंधु एकत्र हुए। जिन्होंने रंगों के खुशनुमा माहौल में एक-दूसरे को बधाई दी तथा आगामी कार्यक्रमों के बारे में चर्चा की। उल्लेखनीय है कि आगामी जून माह में दो दिवसीय भव्य आयोजन किया जा रहा है। जिसमें 51 बटूकों को सामूहिक उपनयन संस्कार एवं अ.भा. युवक-युवती परिचय सम्मेलन किए जाएंगे।

अखिल भारतीय नागर परिषद्, शाखा इन्दौर

(म.प्र. नागर परिषद से सम्बद्ध)

हाटकेश्वर जयन्ती समारोह

त्रैवार्षिक निर्वाचन 2009 एवं साधारण सभा

मान्यवर,

जय हाटकेश,

हमारे अपने इष्टदेव भगवान हाटकेश्वर की जयन्ती एवं वार्षिक साधारण सभा का आयोजन दिनांक 8-4-2009 बुधवार को हाटकेश्वर मंदिर परिसर खजराना, इन्दौर पर किया जा रहा है। इस अवसर पर भगवान का अर्चन, पूजन, अभिषेक, महा आरती एवं प्रसाद ग्रहण किया जावेगा। सभी महानुभावों से साग्रह निवेदन है कि अपनी सक्रिय भागीदारी से संयोग को सुयोग बनावें। इसी दिन अ.भा. नागर परिषद् शाखा इन्दौर एवं महिला मंडल के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष, सहसचिव एवं कार्यकारिणी सदस्यों का निर्वाचन सम्पन्न होगा। निर्वाचन सम्पन्न कराने के लिये प्रो. डॉ. नरेन्द्र नागर को निर्वाचन अधिकारी बनाया गया है। साधारण सभा की कार्यवाही 7.00 बजे से पाटीदार धर्मशाला में सम्पन्न होगी। उम्मीदवार, प्रस्तावक, समर्थक यह सुनिश्चित कर लें कि उनकी सदस्यता 2010 तक की है। कृपया अपनी भागीदारी से प्रगति के आयाम सुस्थापित करने में योगदान करें।

अध्यक्ष-श्रीमती शारदा मंडलोई,
सचिव-डॉ. रेणुका मेहता

अध्यक्ष-रमेश प्रसाद रावल
सचिव-डॉ. नीलेश नागर

स्थान :-पाटीदार धर्मशाला, हाटकेश्वर देवालय के समीप, खजराना, इन्दौर

इलाहबाद की चिट्ठी

विवाह सम्पन्न

इलाहबाद निवासी सौ.कां. दीक्षा सुपुत्री श्रीमती सुधा श्री नित्यानन्द नागर का शुभ पाणिग्रहण संस्कार पानीपत निवासी चि. अतुल सुपुत्र श्रीमती अर्चना-बालेश्वर नागर के साथ 15 फरवरी 2009 को सम्पन्न हुआ।

महाशिवरात्री पर्व

प्रयाग के जीरो रोड स्थित श्री हाटकेश्वर नाथजी मंदिर में महाशिवरात्री पर्व 23 फरवरी को समस्त नागर परिवारों ने अन्य भक्त गणों के साथ श्री हाटकेश्वर नाथजी का विधिवत पूजन-अर्चन, रुद्रपाठ भव्य श्रृंगार दर्शन, प्रसाद वितरण के साथ सम्पन्न हुआ।

-नित्यानंद नागर

प्रतिभा शाली विद्यार्थियों का सम्मान एवं निर्देशिका का प्रकाशन

समाज के होनहार मेघावी छात्रों, जिन्हें दिल्ली बोर्ड की सार्वजनिक परीक्षा के दसवीं तथा बारहवीं (सत्र 2007-08) में कुल प्राप्तांक 80 प्रतिशत से अधिक है उनको मण्डल द्वारा पुरस्कृत किया जायेगा इसलिये उन छात्रों का अपनी सत्यापित अंक सूची 31 मार्च से पूर्व मण्डल कार्यालय में कोरियर से भेज दें। 31 मार्च के बाद कोई अंक सूची स्वीकार नहीं की जायेगी। इस विषय में जानकारी के लिये श्री विनोद कांत नागर (27552648) से सम्पर्क कर सकते है। आपको यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा, दिल्ली राजधानी क्षेत्र (N.C.R.) के नागर ब्राह्मणों के निवास स्थानों (दूरभाष सहित) की निर्देशिका 2010, मण्डल द्वारा शीघ्र प्रकाशित की जा रही है। अतः आप अपने तथा अपने सम्बंधियों के पते (दूरभाष सहित) श्री सुधीर पण्डया, ई-921 सरस्वती विहार, दिल्ली-34 के पते पर शीघ्र भेज दें। जो व्यक्ति निर्देशिका में अपने विचार सामाजिक उत्थान संबंधित लेख, नागर समाज के इतिहास के गौरवशाली व्यक्तियों पर लेख (लगभग 250 शब्दों का), शीघ्र से शीघ्र श्री सुधीर पण्डया को भेज दें।

प्रस्तुति- चन्द्रमोहन व्यास,
श्री हाटकेश्वर नाथ नागर ब्राह्मण मण्डल, दिल्ली

पूजारी आमंत्रित है।

लगभग 34 वर्षों की लगातार बाबा हाटकेश्वर मंदिर में पूजा-अर्चना के पश्चात दिनांक 22 जनवरी को 70 वर्ष की आयु में श्रीश्रीरामजी जानी (नागर) का देहावसान हो गया। उनके असमय गोलोक सिधारने से प्रयाग में जीरो रोड स्थित श्री हाटकेश्वर मंदिर में पूजारी के रूप में एक अपूरणीय क्षति हो गई है। भारत के किसी भी शहर या ग्राम से कोई नागर व्यक्ति मंदिर की पूजा अर्चना पूजारी के रूप में करना चाहते हो तो उसे ट्रस्ट आमंत्रित करता है। पूजारी को मंदिर के अंदर प्रांगण में आवासीय सुविधा भी प्रदान की जावेगी। **सम्पर्क करें-प्रमोद नागर**

3-बी/4, बैंक रोड, इलाहाबाद, फोन 0532-2440315

अम्बाजी मंदिर के द्वार खुलवाने के लिए नागर एकजुट

अहमदाबाद। बड़े अम्बाजी मंदिर में अधिकारियों द्वारा हर दो-तीन महीने मंदिर के द्वार कोई अगम्य शक्ति के इशारे पर बंद कर दिये जाते है। विगत दिनांक 12-12-08 से रोज शक्ति द्वार के सिवा मंदिर के तमाम दरवाजे बंद कर दिये हैं। नागर हितों की रक्षा के लिये समग्र गुजरात नागर परिषद के सदा जागरुक प्रहरी श्री नरेश राजा ने डेलीगेशन सह गुजरात नागर परिषद् महामंडल द्वारा टी.पी. स्कीम में नागर मढ़ के हक के सबूत प्रस्तुत किये थे। किंतु अभी तक चाचर चौक वाले दरवाजे से थाली धरने के आर्डर चालू ना होने से पुनः 27-1-2009 को श्री अरुण भाई बुच (चेयर मेन सलाहकार समिति) के नेतृत्व में संघवी श्री नरेश राजा (प्रमुख श्री) सुभाष भाई भट्ट उप प्रमुख श्री मनु भाई मेहता अहमदाबाद साथ समस्त विसनगरा नागर महाढ़ ट्रस्ट, अम्बाजी के प्रमुख श्री वासुदेव भाई पंड्या, श्री देसाई भाई के प्रतिनिधि मण्डल ने श्री जय नारायण भाई व्यास धार्मिक रीगत आरोग्य मंत्री के समक्ष प्रस्तुत की थी और विस्तृत जानकारी के साथ नागरम्हाढ़ो के दरवाजे माताजी को थाल धरने की पवित्रता तथा गौरव बना रहे उसके लिये पूर्ववत् खोलने का सर्वानुमति से नक्की हुआ है और उस अनुसार जो अधूरी सूचना है। जवाबदार अधिकारी श्री को जानकारी दी है सम्भवतः दिनांक 5 फरवरी 2009 से उसे थाल धरने के लिये दरवाजे खुलेंगे ऐसा लगता है समग्र गुजरात नागर परिषद (महामण्डल) की नागर समाज की सेवा के लिये जागरुकता हो इसलिए यह कार्य सिद्ध हुआ है इसके लिये हम आभार प्रदर्शित करते है। **- नरेश राजा**

आचार्य पं. सन्तोष कुमार व्यास (देवज्ञ)

हस्तरेखा विशेषज्ञ, वास्तुविद्, कुंडली मिलान

(ज्योतिष विद्या से बतायें भविष्य फल का आधार श्रद्धा व विश्वास है।)

10, बीमानगर, खजराना रोड़, इन्दौर फोन 4060184, मो. 9425963751

कभी भुला ना पाएंगे 'बेन' को

इस दुनिया में जो आता है उसका अंत निश्चित है लेकिन इनमें से कुछ लोग ऐसे होते है जो देह त्यागने के बाद भी सभी के दिलों पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाते है इनमें से ही एक है दैनिक अवंतिका परिवार की श्रीमती प्रभादेवी स्व. शिवप्रसाद शर्मा जो हमें 23 मार्च 2009 को छोड़कर चली गई। सभी के बीच 'बेन' के नाम से लोकप्रिय श्रीमती प्रभादेवी ने शुरुआत में काफी संघर्ष किया। अपने संघर्षशील जीवन के बावजूद बेन ने कभी किसी को निराश नहीं किया। यही नहीं उन्होंने नागर ब्राह्मण समाज को भी एक सूत्र में पिरोने में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रखी। जब भी कोई जूनी कसेरा बाखल स्थित घर पर आता था तो बेन के मुख से यही आवाज निकलती 'संगीता महेश आया है, इनका लिए चाय-पानी ले आओ। अगर कोई भोजन के समय आता तो इसमें मेहमान को भी सहभागी बनना होता था। बेन का सभी से लगाव किसी से छुपा नहीं है। वे किसी के भी सुख-दुख में जुड़ने में अपना सौभाग्य समझती थी। यही कारण रहा कि बेन उनके परिवार को कोई भी अपने पारिवारिक कार्यक्रम में सबसे आगे रखता था। उनके संघर्ष शील जीवन में दीपक दादा, पवन भैया और मनीष को इतना मजबूत बनाया कि यह परिवार वर्तमान में किस मुकाम तक पहुंच चुका है, यह बताने की जरुरत नहीं है। मार्च 2008 में चौदस का वह दिन जब बेन के फिसलने से उनके पैर की हड्डी टूट जाने को दुर्भाग्य ही कहा जाएगा। क्योंकि इसके बाद से ही बेन को बीमारियों ने अपनी जकड़ में ले लिया। हालांकि उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और इस दौरान अपनी गतिविधियां जारी रखी। लेकिन ठीक एक वर्ष 23 मार्च 2009 को वे हमें छोड़कर चली गई। खैर देह त्यागने से ही व्यक्ति को भुलाया नहीं जा सकता। उनकी हर एक बात को कभी नहीं भुलाया जा सकेगा। अभी भी बेन साहब हमारे बीच मौजूद है।

-संगीता-गजेन्द्र नागर

प्रभाबेन-एक विनम्र श्रद्धांजलि

आज हमारी श्रद्धांनिधि 'प्रभाबेन' हमारे बीच नहीं है आपका श्रीजी शरण 23-3-2009 को हो गया। बात कल ही की थी, और आज कुछ ओर ही है, विधि का विधान चित्र ऐसा ही विचित्र है। आपकी यादें ही जीवन जीने का अब आधार है। हमारी 'प्रभाबेन' में सम्पूर्ण व्यक्तित्व की झलक मिलती थी। प्यार, दुलार, स्नेह की पराकाष्ठा थी। हमेशा हंसमुख, चेहरे पर दिव्य तेज झलकता था। ममता व करुणा की मूर्ति जिनके सानिध्य में हम अपने दुःख, शोक, क्लेश, भूल जाया करते थे। आपकी ठहाकेदार हंसी कानों में अमृत घोल देती थी। अभिमान रहित उनका व्यक्तित्व व कृतित्व, गहन व गंभीर विचार के सम्पर्क में जो आता गदगद हो जाता। आनन्द की राशि, स्नेहसनी, करुणा की देवी हमें बिलखता छोड़ गई, इस अपूरणीय क्षति की भरपाई संभव नहीं है करुणा से द्रवित कैसे दुःख से उबर पायेंगे। नियति के विधान को हम पामर जीव क्या जाने किन्तु यह असामयिक वज्रपात झकझोर गया। मन बार-बार कह उठता है 'न प्रीयते परार्थेन योडसौ तं नौमि प्रभा बेन' उस पुनीत आत्मा हमारी आदर्श, प्रेम, प्यार व स्नेह के पावन संगम की छवि प्रभा बेन को विनम्र श्रद्धांजलि। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें। और पूरे परिवार को शक्ति प्रदान करें।

-रमेश रावल, डेलची माकड़ोन

श्रद्धांजलि

प्रभादेवी शर्मा (बेन) के निधन पर राजस्थान नागर (ब्राह्मण) परिषद् अकलेरा जि. झालावाड़ के महासचिव कुलेन्द्र नागर एड्व्होकेट ने समस्त नागर समाज की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्रद्धांजलि

आपको न भूल पाएंगे

प्रभादेवी शर्मा (बेन)

गिरजाशंकर नागर (चक्की वाले)

राऊ (इन्दौर)